वर्ष १, अंक २, - फेब्रुवारी २०१८

॥ वेदस्य निर्मलं चक्षुर्ज्योतिःशास्त्रमनुत्तमम् ॥

|| हिंदी - मराठी की पहली इ- पत्रिका ||

www.jyotishjagat.com

|| वेदस्य निर्मलं चक्षुज्योति:शास्त्रमनुत्तमम् ||

|| मराठी-हिंदी मधील पहिले इ- मासिक *हिंदी-मराठी की पहली इ- पत्रिका ||

वर्ष -१ अंक -१ फेब्रुवारी २०१८

हिंदी विभाग

English section

मराठी विभाग

* Disclaimer – The opinion expressed in each article is the opinion of its author & does not necessarily reflect the opinion of Jyotish Jagat.

|| महाशिवरात्रि ||

महाशिवरात्रि का पुण्य पर्व सम्पूर्ण भारत वर्ष में बड़ी श्रद्धा एवं आस्था के साथ मनाया जाता है। शिवजी का एक नाम आशुतोष भी है। आशु-अर्थात शीघ्र, तोष- अर्थात संतुष्ट यानी शीघ्र प्रसन्न होने वाले देव है। भगवान शिव शीघ्र प्रसन्न होते हैं। जरासा जल एवं बिल्वपत्र भक्ति पूर्वक चढ़ा देने मात्र से शीघ्र संतुष्ट होकर भक्तों को मन चाहा वर दे देते हैं। शिव से वरदान लेने वालों को सावधानी भी रखनी चाहिए। शिव से वरदान लेकर अशिव कार्य करने से भस्मासुर के समान स्वयं की ही हानि होती है। शिव सभी प्राणियों पर अपनी कृपा दृष्टि रखते है। शिव की उपासना मनुष्य के लिए कल्पवृक्ष की प्राप्ति के समान है।भगवान शिव से जिसने जो चाहा उसे प्राप्त हुआ।देवता, दानव और मनुष्य ही नहीं समस्त चरा-चर का कोई ईश्वर है तो वह है सदाशिव, भगवान शिव अपने पास कुछ नहीं रखते बल्कि सब कुछ अपने भक्तों को दे देते हैं। भगवान शिव सृष्टि के सभी प्राणियों पर समान भाव रखते हैं। साधारणत: सामान्य लोग जिन प्राणियों से घृणा एवं वैर करते हैं। उनको भगवान शंकर ने अपनी शरण दे दी है। भूत-प्रेत गण, सर्प बिच्छू आदि से उनका प्रेम भाव उनकी समदृष्टि ही दर्शाता है। गले में सर्प को धारण करने का तात्पर्य काल पर विजय प्राप्ति से है। जिससे इनका एक नाम महामृत्युंजय भी है। वृष की सवारी का तात्पर्य काम पर विजय एवं धर्म की रक्षा है। इनका दरिद्र एवं अमंगल वेश होने पर भी ये सभी प्राणी मात्र के लिए मंगलकर्ता एवं दरिद्रहर्ता है। इनकी पूजा करने वाला व्यक्ति कभी दरिद्र नहीं होता है। वे भक्त की इच्छा अनुसार भोग एवं मोक्ष देने वाले हैं। शिव का शाब्दिक अर्थ कल्याणकारी होता है। इस दृष्टि से महाशिव रात्रि का अर्थ हुआ कल्याणकारी रात्रि। चतुर्दशी तिथि के स्वामी शिव हैं। यह तिथि उनकी प्रिय तिथि है। जैसा कि निम्न श्लोक में वर्णित है।

चतुर्दश्यां तु कृष्णायां फाल्गुने शिवपूजनम्।

तामुपोष्य प्रयत्नेन विषयान् परिवर्जयेत।।

शिवरात्रि व्रतं नाम सर्वपापप्रणाशनम्।

-शिवरहस्य

महाशिवरात्रि का व्रत फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी तिथि को किया जाता है। वैसे तो प्रत्येक मास की कृष्ण चतुर्दशी को शिव भक्त मास शिवरात्रि के रूप में व्रत करते हैं, लेकिन इस शिवरात्रि का शास्त्रों के अनुसार बहुत बड़ा माहात्म्य है। ईशान संहिता के अनुसार फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी को अर्द्धरात्रि के समय भगवान शिव परम ज्योतिर्मय लिंग स्वरूप हो गए थे इसलिए इसे महाशिवरात्रि मानते हैं।

शास्त्रों के अनुसार शिवरात्रि के व्रत के बारे में भिन्न-भिन्न मत हैं, परंतु सर्वसाधारण मान्यता के अनुसार जब प्रदोष काल रात्रि का आंरभ एवं निशीथ काल (अर्द्धरात्रि) के समय चतुर्दशी तिथि रहे उसी दिन शिव रात्रि का व्रत होता है।

समर्थजनों को यह व्रत प्रातः काल से चतुर्दशी तिथि रहते रात्रि पर्यंत तक करना चाहिए। रात्रि के चारों प्रहरों में भगवान शंकर की पूजा अर्चना करनी चाहिए। इस विधि से किए गए व्रत से जागरण, पूजा, उपवास तीनों पुण्य कर्मों का एक साथ पालन हो जाता है और भगवान शिव की विशेष अनुकंपा प्राप्त होती है। व्यक्ति जन्मांतर के पापों से मुक्त होता है। इस लोक में सुख भोगकर व्यक्ति अंत में शिव सायुज्य को प्राप्त करता है। जो लोग इस विधि से व्रत करने में असमर्थ हों वे रात्रि के आरंभ में तथा अर्द्धरात्रि में भगवान शिव का पूजन करके व्रत पूर्ण कर सकते हैं। यदि इस विधि से भी व्रत करने में असमर्थ हों तो पूरे दिन व्रत करके सायंकाल में भगवान शंकर की यथाशक्ति पूजा अर्चना करके व्रत पूर्ण कर सकते हैं। इस विधि से व्रत करने से भी भगवान शिव की कृपा से जीवन में सुख, ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। शिवरात्रि में संपूर्ण रात्रि जागरण करने से महापुण्य फल की प्राप्ति होती है।

महाशिवरात्रि का पौराणिक महत्व –

शिवरात्रि के साथ कई पौराणिक कथाएं जुड़ी हुई हैं। शिवरात्रि के महत्व को जानने के लिए हमें इन पौराणिक कथाओं को जानना होगा।

समुद्र मंथन पौराणिक कथा -

सभी पौराणिक कथाओं में नीलकंठ की कहानी सबसे ज्यादा चर्चित है। ऐसी मान्यता है कि महाशिवरात्रि के दिन ही समुद्र मंथन के दौरान कालकेतु विष निकला था। भगवान शिव ने संपूर्ण ब्राह्मांड की रक्षा के लिए स्वंय ही सारा विष पी लिया था। इससे उनका गला नीला पड़ गया और उन्हें नीलकंठ के नाम से जाना गया।

भगवान शिव का प्रिय दिन –

एक मान्यता यह भी है कि फाल्गुन माह का 14वां दिन भगवान शिव का प्रिय दिन है। इसलिए महाशिवरात्रि को इसी दिन मनाया जाता है।

शिव और पार्वती का विवाह –

पुराणों के अनुसार महाशिवरात्रि ही वह दिन है, जब भगवान शिव ने पार्वती से विवाह रचाया था।

महाशिवरात्रि की रात्रि महा सिद्धि दायिनी होती है। इस समय में किए गए दान पुण्य, शिवलिंग की पूजा, स्थापना का विशेष फल प्राप्त होता है। इस सिद्ध मुहूर्त में पारद अथवा स्फटिक शिवलिंग को अपने घर में अथवा व्यवसाय स्थल या कार्यालय में स्थापित करने से घर-परिवार, व्यवसाय और नौकरी में भगवान शिव की कृपा से विशेष उन्नति एवं लाभ की प्राप्ति होती है। परमदयालु भगवान शंकर प्रसन्न होकर मनोवांछित फल प्रदान करते हैं।

महिलाओं के लिए शिवरात्रि का विशेष महत्व है। अविवाहित महिलाएं भगवान शिव से प्रार्थना कर सकती हैं कि उन्हें उनके जैसा ही पति मिले। वहीं विवाहित महिलाएं अपने पति और परिवार के लिए मंगल कामना कर सकती हैं।

महाशिवरात्रि के दिन अथवा नागपंचमी के दिन किसी सिद्ध शिव स्थल पर कालसर्प योग की शांति करा लेने का अति विशिष्ट महत्व माना जाता है। निरंतर महामृत्युंजय मंत्र के जप से, शिवोपासना से, हनुमान जी की आराधना से एवं भैरवोपासना से यह योग शिथिल पड़ जाता है।

****

॥ श्रीशिवताण्डवस्तोत्रम् रावणरचितम् ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

जटाटवीगलज्जलप्रवाहपावितस्थले
गलेऽवलम्ब्य लम्बितां भुजङ्गतुङ्गमालिकाम् ।
डमड्डमड्डमड्डमन्निनादवड्डमर्वयं
चकार चण्डताण्डवं तनोतु नः शिवः शिवम् ॥ १॥

जटाकटाहसम्भ्रमभ्रमन्निलिम्पनिर्झरी-
-विलोलवीचिवल्लरीविराजमानमूर्धनि ।
धगद्धगद्धगज्ज्वलल्ललाटपट्टपावके
किशोरचन्द्रशेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम ॥ २॥

धराधरेन्द्रनंदिनीविलासबन्धुबन्धुर
स्फुरद्दिगन्तसन्ततिप्रमोदमानमानसे ।
कृपाकटाक्षधोरणीनिरुद्धदुर्धरापदि
क्वचिद्दिगम्बरे(क्वचिच्चिदम्बरे) मनो विनोदमेतु वस्तुनि ॥ ३॥

जटाभुजङ्गपिङ्गलस्फुरत्फणामणिप्रभा
कदम्बकुङ्कुमद्रवप्रलिप्तदिग्वधूमुखे ।
मदान्धसिन्धुरस्फुरत्त्वगुत्तरीयमेदुरे
मनो विनोदमद्भुतं बिभर्तु भूतभर्तरि ॥ ४॥

सहस्रलोचनप्रभृत्यशेषलेखशेखर
प्रसूनधूलिधोरणी विधूसराङ्घ्रिपीठभूः ।
भुजङ्गराजमालया निबद्धजाटजूटक
श्रियै चिराय जायतां चकोरबन्धुशेखरः ॥ ५॥

ललाटचत्वरज्वलद्धनञ्जयस्फुलिङ्गभा-
-निपीतपञ्चसायकं नमन्निलिम्पनायकम् ।
सुधामयूखलेखया विराजमानशेखरं
महाकपालिसम्पदेशिरोजटालमस्तु नः ॥ ६॥

करालभालपट्टिकाधगद्धगद्धगज्ज्वल-
द्धनञ्जयाहुतीकृतप्रचण्डपञ्चसायके ।
धराधरेन्द्रनन्दिनीकुचाग्रचित्रपत्रक-
-प्रकल्पनैकशिल्पिनि त्रिलोचने रतिर्मम ॥। ७॥

नवीनमेघमण्डली निरुद्धदुर्धरस्फुरत्-
कुहूनिशीथिनीतमः प्रबन्धबद्धकन्धरः ।
निलिम्पनिर्झरीधरस्तनोतु कृत्तिसिन्धुरः
कलानिधानबन्धुरः श्रियं जगद्धुरंधरः ॥ ८॥

प्रफुल्लनीलपङ्कजप्रपञ्चकालिमप्रभा-
-वलम्बिकण्ठकन्दलीरुचिप्रबद्धकन्धरम् ।
स्मरच्छिदं पुरच्छिदं भवच्छिदं मखच्छिदं
गजच्छिदांधकच्छिदं तमन्तकच्छिदं भजे ॥ ९॥

अखर्व(अगर्व)सर्वमङ्गलाकलाकदम्बमञ्जरी
रसप्रवाहमाधुरी विजृम्भणामधुव्रतम् ।
स्मरान्तकं पुरान्तकं भवान्तकं मखान्तकं
गजान्तकान्धकान्तकं तमन्तकान्तकं भजे ॥ १०॥

जयत्वदभ्रविभ्रमभ्रमद्भुजङ्गमश्वस-
-द्विनिर्गमत्क्रमस्फुरत्करालभालहव्यवाट् ।
धिमिद्धिमिद्धिमिध्वनन्मृदङ्गतुङ्गमङ्गल
ध्वनिक्रमप्रवर्तित प्रचण्डताण्डवः शिवः ॥ ११॥

दृषद्विचित्रतल्पयोर्भुजङ्गमौक्तिकस्रजोर्-
-गरिष्ठरत्नलोष्ठयोः सुहृद्विपक्षपक्षयोः ।
तृणारविन्दचक्षुषोः प्रजामहीमहेन्द्रयोः
समं प्रवर्तयन्मनः कदा सदाशिवं भजे ॥ १२॥

कदा निलिम्पनिर्झरीनिकुञ्जकोटरे वसन्
विमुक्तदुर्मतिः सदा शिरः स्थमञ्जलिं वहन् ।
विमुक्तलोललोचनो ललामभाललग्नकः
शिवेति मंत्रमुच्चरन् कदा सुखी भवाम्यहम् ॥ १३॥

निलिम्प नाथनागरी कदम्ब मौलमल्लिका-
निगुम्फनिर्भक्षरन्म धूष्णिकामनोहरः ।
तनोतु नो मनोमुदं विनोदिनींमहनिशं
परिश्रय परं पदं तदङ्गजत्विषां चयः ॥ १४॥

प्रचण्ड वाडवानल प्रभाशुभप्रचारणी
महाष्टसिद्धिकामिनी जनावहूत जल्पना ।
विमुक्त वाम लोचनो विवाहकालिकध्वनिः
शिवेति मन्त्रभूषगो जगज्जयाय जायताम् ॥ १५॥

इदम् हि नित्यमेवमुक्तमुत्तमोत्तमं स्तवं
पठन्स्मरन्ब्रुवन्नरो विशुद्धिमेतिसंततम् ।
हरे गुरौ सुभक्तिमाशु याति नान्यथा गतिं
विमोहनं हि देहिनां सुशङ्करस्य चिंतनम् ॥ १६॥

पूजावसानसमये दशवक्त्रगीतं
यः शम्भुपूजनपरं पठति प्रदोषे ।
तस्य स्थिरां रथगजेन्द्रतुरङ्गयुक्तां
लक्ष्मीं सदैव सुमुखिं प्रददाति शम्भुः ॥ १७॥

॥ इति श्रीरावणविरचितं शिवताण्डवस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

****

लेख आमंत्रित है।

नमस्कार,

आपका स्वागत है। हमारा उद्येश यहि है एक ही जगह पे सभी विषयोंका ज्ञान, लेख लोग पड सके। इससे पाठकों के लिए जादा और अच्छे विकल्प तथा विविधता मिलेंगी। साथही लेखकोंके लिए व्यापक पाठक गणोंतक पोहंचनेका अवसर मिलेगा। हम मासिक पत्रिका / वेबसाईट के रुपमे एक मंच तय्यार कर रहे है जहां पे लेखक और पाठक दोनोंको एकसाथ लाया जा सके। इन विषयोंका आपका ज्ञान, अनुभव, प्रतिभा लोगोंके सामने रखनेका इससे बेहतर माध्यम शायदही आपको कही और मिले।

ज्योतिष (सभी शाखाए), वास्तुशास्त्र, अंकशास्त्र, सामुद्रिक शास्त्र, डाऊजिंग, रमल, टॅरो, रेकी, अध्यात्म, धर्म, संस्कृती, आयुर्वेद इ. विषयोंपे अगर आप लेख (हिंदि/मराठी/English) लिख सकते है तो आपका स्वागत है। आपके इन विषयोंपे लिखे लेख हम अपनी मासिक पत्रिका साथ ही वेब साईट के जरीए जादा से ज्यादा पाठकों तक पोहचा सकते है ओ भी आपके नाम और फोटो सहीत। अगर आप के पास इन विषयों का ज्ञान हो, अभ्यास हो, अनुभव हो और उसे शब्दोंमे लिखनेकी प्रतिभा हो तो आपके लेख हमे भेज दे। अपना ज्ञान, अपना हुनर लोगोंके सामने लाए। या आप वेबसाइट पर अपने लेख अपलोड भी कर सकते हैं।

* शर्त और नियम - हमारे पास भेजे गये लेख किसी और सोशल मिडीया पे ना लिखे। अगर चाहे तो इसकी लिंक शेअर कर सकते है। लेख खुद का लिखा होना चाहिए, किसी और का अपने लिखा ना हो।

अगर आपका लिखा लेख किसी किताब, ग्रंथ, Blog या website का हिस्सा हो तो संदर्भ (Reference) के तौर पे उसका नाम और लेखक का नाम जरुर लिखे। इसी तरह अगर आपका लेख किसी और भाषा से भाषांतरीत है तो भी सन्दर्भ दे।

अपना लेख MS word File में (जरुरीहो तो image इस्तेमाल कर) निचे दिए गये Email पे भेज दे। ।

धन्यवाद !

ज्योतिष जगत

Mail us - articles.jyotishjagat@gmail.com

Or Upload on

www.jyotishjagat.com

कसा आहे तुमचा वेलेन्टाइन ?

श्री उत्तम रमेश गावडे

ज्योतिष विशारद, वास्तु विशारद

प्रेम म्हणजे, प्रेम म्हणजे, प्रेम असते!
अन तुमचे नि आमचे अगदी सेम असते!
पण खरोखरच सगळ्यांच प्रेम हे सेम असते काय? व्यवहारात तरी तसे अढळून मात्र येत नाही.

काही जण नजरेला नजर भिडताच प्रेमात पडतात, तर काही जण अनेक वर्षे एकत्र राहूनही त्यांच्यात प्रेम होऊ शकत नाही, काही जण अनेक प्रेमाचा आस्वाद घेत असतात, तर काही जण प्रतिसादाविनाही एकानिष्ठेने एकाच व्यक्तीवर प्रेम करत असतात. काही जण प्रेम भंगाचे दु:ख पचवितात, तर कही जण प्रेम भंगाच्या सूडाने पेठून ऊठतात. प्रत्येकाच्या प्रेमाचे हे विविध रंग राशींच्या माध्यमातून समजून घेता येऊ शकतात. ज्योतिषशास्त्रीय दृष्ट्या वेगवेगळ्या राशीमधून त्यांचे वर्गिकरण करता येण्यासारख आहे.

पुढील गोष्टीवरुन व्यक्तिंचे स्वभाव व त्याच्या जोडीदारांकडून असलेल्या अपेक्षा, त्यांची प्रेम करण्याची पद्धत यांचा अंदाज घेता येऊ शकतो. तर मग जाणुण घ्या 'कसा आहे तुमचा व्हेलेंटाईन'.

(पुढे देण्यात आलेले राशी गुणधर्म जसेच्या तसेच अनुभवास येतीलच असे नाही. याचे कारण म्हणजे प्रेम जीवानाचा विचार करताना राशीबरोबरच मंगळ व शुक्र ग्रह यांचाही विचार करावयाचा असतो, मंगळ व शुक्र बलवान असून ज्या राशीत असतात त्याप्रमाणे व्यक्तीचा स्वभाव असू शकतो, तसेच जन्म कुंडलीत अनेक ग्रह एकाच राशीत असतील तर ती राशी उत्तेजीत होऊन त्या राशीचे गुणधर्म त्या व्यक्तित दिसुन येतात. पण या सर्व गोष्टी प्रत्येकाला माहित असतीलच असे नाही म्हणून येथे राशींचे माध्यम वापरलेले आहे.)

मेषराशीचे प्रेम-

राशीचक्रातील ही पहिली रास आहे. अग्नि तत्वाची चर रास असून या राशीचा स्वामी मंगळ ग्रह आहे. हे लोक शरिराने व मनाने उत्साही असून यांना आव्हानांची आवड असते. हे स्वतंत्र प्रवृत्तीचे असून, दुसऱ्याच्या आधिन राहणे यांना आवडत नाही. हे स्वत:च्या निर्णयानुसारच कार्य करतात. पण यांच्यात सारासार विचार करण्याची शक्ति कमी असते. प्रेमात अतिशय आक्रामक व उत्साही असतात. बुद्धिपेक्षा भावनेच्या आहारी जाणारे लोक असतात. एकदम वीज कोसळावी तशी प्रेमात पडतात व तेवढ्याच वेगाने त्यातून बाहेर ही पडतात. यांच्या बाबतीत love at first sight प्रथम दर्शनी प्रेमाची शक्यता जास्त असते. लपवाछपवीचा प्रकार यांना आवडत नाही. हे लोक प्रेमात हळवे नसतात तर उतावळे असतात. त्याचप्रमाने कुणाच्याही

प्रेमात झुरत बसणे, प्रेम व्यक्त न करता मनात दाबून ठेवणे यांना जमत नाही. मुळातच साहसप्रिय असल्याने प्रेमात पडल्यास सतत पाठलाग करुन स्पष्ठ व स्वच्छ शब्दात उघडपणे प्रेम व्यक्त करतात. प्रेम व्यक्त करण्यासाठी एकांताचीच गरज पाहिजे असे नाही. चारचौघात अगर लोकांसमोरही ते तितक्याच आत्मविश्वासाने व स्पष्टपणे व्यक्त करतात. नीतिनियमांची फारशी पर्वा करीत नाहीत. प्रेम मिळवण्यासाठी वाटेल ते करण्याची तयारी असते. यांना भडक शृंगाराची आवड असते. प्रेमात जोडीदारकडून सहज प्रतिसाद मिळाल्यास यांचा प्रेमातील रस कमी होतो. याना निर्णयही जलद हवा असतो फार काळ वाट पहात बसणे जमत नाही.

वृषभ राशीच प्रेम-

दुसरी रास वुषभ, पृथ्वी तत्वाची स्थिर रास असून आर्थिक उत्कर्ष घडवून आणणारी ही रास शुक्र या ग्रहाच्या अधिपत्याखाली येते. हे लोक व्यवहारी, रसिक, कलावंत, हौशी व चैनी असतात, तसेच स्वभावाने प्रेमळ पण हटटी असतात. या लोकांना ऐहिक सुखाची फार आवड असते, गाडी-सुंदर बंगला व ऐशाआरामाच्या साधनांची फार हौस असते. सुख व आराम मिळवीण्यासाठी सतत धडपड चालू असते. व्यक्तीमत्व आकर्षक असेले तरी ते अधिक आकर्षक बनवीण्याचाच यांचा सतत प्रयतन असतो. स्वत:ला सुंदर व आकर्षक बनविण्यावर हे लोक बराच खर्च करत असतात. लोभस बोलणे व आकर्षक व्यकतीमत्व हे यांचे खास वैशिष्ट्य आहे यामुळेच हे लोक विरुद्ध लिंगी लोकांत विशेष प्रिय असतात. प्रेमाच्या बाबतीत हे लोक चोखंदळ असतात. प्रेम करताना सुरक्षिततेचा विचार सर्व प्रथम करतात. प्रियकराकडून जीवनभराच्या साथीची, स्थिर व दृढ प्रेमाची अपेक्षा असते. प्रेमात एकदम एकनिष्ठ असतात व प्रियकराकडूनही निस्वार्थी व एकनिष्ठ प्रेमाची अपेक्षा ठेवतात. प्रियकाराच्या मनाचा अंदाज घेत मंद गतिने प्रेमाची प्रगती चालु असते. मेष राशीप्रमाणे एकदम व अचानक नसते. प्रियकराचे मन आकर्षित करुन त्याला जिंकण्यात चतुर असतात. आपल्या प्रियकराला खुष ठेवण्यासाठी सतत प्रयत्नशील असतात. प्रियकरासाठी सहजपणे स्वार्थ त्याग करतात. यांना लैंगिक सुखाची आवड असते. या राशीचे लोक हे अतिशय Romantic असतात. याना लैंगिक जीवनाची विलक्षण आवड असते.

श्री उत्तम रमेश गावडे

ज्योतिष विशारद, वास्तु विशारद

9901287974

मिथुन राशीचे प्रेम-

मिथुन ही बुधाची, वायुतत्वाची द्विस्वभावी रास आहे. ही बौद्धिक रास आहे. विनोद बुद्धि व हजरजबाबीपणा हे यांचे खास गुण. इतरांवर टिका करण्याची सवय असते, पण एखाद्या विषयात पारंगत होणे कठीण असते. कारण एखाद्दा विषयात निर्माण झालेली आवड तशीच कायम टिकेल याची शाश्वती नसते. मिथुन राशीच्या लोकांचा स्वभाव अतिशय बोलका असल्याने लोकांशी पटकन मैत्री जमते. कामाच्या ठिकाणी तर हे लोक विशेष लोकप्रिय असतात. यांना पुष्कळ मित्र-मैत्रिणी असतात. आपल्या विनोदी व चतुर संभाषणाने संभोवातलच्या व्यक्तीना आपल्याकडे आकार्षित करत असतात. प्रेमात विविध भेट वस्तु देऊन व प्रियकराची स्तुती करुन प्रियकराला खुष ठेवण्यात चतुर असतात. हे लोक अप्रामाणिक अगर फसवे नसतात पण या राशिंच्या बऱ्याच लोकाम्ना फर्ल्ट करण्याची सवय असते त्यामुळे ते प्रेमात किती गंभीर आहेत हे साम्गणे कठिण असते. या राशीचे बरेच लोक 'आज पुजा कल कोई दुजा' हे तंत्र वापरताना दिसतात. एका प्रेम प्रकरणातील अपयश विसरुन लगेच पुढच्या प्रकरणाला सुरुवात करतात. स्वभावाने थोडेसे घाबरट असल्याने आपले प्रेम बिनधास्तपणे व्यक्त करण्याऐवजी इशाऱ्यांच्या, मध्यस्थांच्या अथवा प्रेम

पत्रांच्या सहाय्याने लपुन छपून प्रेम करत असतात. पण प्रकरण अंगाशी आल्यास त्यातून सही सलामत बाहेर पडण्यातसुद्धा पटाईत असतात.

कर्क राशीचे प्रेम-

कर्क ही जल तत्वाची चर रास असून या राशीचा स्वामी चंद्र ग्रह आहे. या राशीचे लोक स्वभावाने प्रेमळ, दयाळू व भावानाप्रधान असतात. मनाने चंचल व लहरी असून कल्पनाशक्ती उत्कृष्ट असते, तसेच हे क्षमाशील व चिंतनशील असतात. यांचे मूड क्षणाक्षणाला बदलताना दिसतात. या राशीमध्ये सहनशीलता खूप असते. आई व कुटुंबाविषयी प्रेम असते. पैशांपेक्षा प्रेम, स्नेह व आस्था या गोष्टी यांच्यासाठी महत्वाच्या असतात. जोडीदाराविषयीच्या कलपना खूपच आदर्शवादी असतात. यांचे प्रेम अत्यंत उत्कट असते. प्रियकरासाठी सहज स्वार्थत्याग करु शकतात. उदर अंत:करणाचा व प्रेमळ अशा जोडीदाराची याना अपेक्षा असते. प्रेम करताना विवाहाचा विचार करुनच प्रेम करतात. Long Term प्रेमाची अपेक्षा असते. प्रेमात आलेले अपयश हे या लोकांच्या मनाला लागते. प्रेमातले अपयश हे लोक सहसा विसरु शकत नाहीत. कोणीही यांचा भावनांशी खेळलेले यांना बिलकुल सहन होत नाही. प्रेम व्यक्त करतानाही बराच विचार करतात,बराच वेळ घालवतात. मनातल्या सर्व शंकांच समाधान झाल्याशिवाय अंतिम निर्णय घेत नाहीत.

सिंह राशीचे प्रेम-

तेजस्वी रवि या ग्रहाच्या अधिपत्याखालील सिंह ही अग्नि तत्वाची स्थिर रास आहे. ही राज राशी आहे. या राशीच्या लोकांचे व्यक्तीमत्व अकर्षक व प्रभावी असते. बोलणे प्रभावी असून इतरांवर छाप सोडणारे असते. वरच्या दर्जाच्या व प्रतिष्ठित लोकांशी संबंध ठेवतात, हलक्या दर्जाच्या लोकांत राहणे यांना आवडत नाही. शिस्त व मान या गोष्टी यांच्या दृष्टने महत्वाच्या असतील, बेशिस्त पणा व स्वत:चा अपमान कधीही सहन होत नाही. यांच्या मानापमानाच्या कल्पना अफाट असतात, थोडेसे रागीष्ट स्वभावाचे असतात. हे अतिशय स्वाभिमानी असून कोणी यामचा स्वाभिमान दुखावला तर ते यांना सहन होत नाही. आपल्या जोडीदाराची निवड स्वत: पुढाकार घेऊन करतात. गुणांपेक्षा राहणीमानला अधिक महत्व देतात. खेळकर, प्रेमळ व प्रतिष्ठित जोडिदाराची अपेक्षा असते. जोडिदाराने आपल्यावर हुकुमत गाजविणे यांना कधीच सहन होत नाही. या राशीचे लोक प्रेमात मात्र कधीही माघार घेत नाहीत. कोणत्याही परिस्थितीत जोडीदाराला सांभाळतात, त्याला पाठबळ देतात. प्रेमाचे प्रदर्शन करण्याची हौस असते.

कन्या राशीचे प्रेम-

कन्या ही बुधाची, पृथ्वी तत्वाची द्विस्वभावी रास आहे. या राशीचे लोक हे वयाने नेहमी लहान दिसतात. या राशीचे लोक सभ्य, लाजाळू व नम्र असतात. हे चिकित्सक, व्यवहारी व हजरजबाबी असतात. केवळ निरीक्षणाने ज्ञान मिळऊ शकतात. स्वार्थीपणा हा एक दुर्गुण असू शकतो. ही द्विस्वभावी रास असल्याने यांचा निर्णयात ठामपणा नसून चंचलता असते. हे संशयी व सावध असतात. स्वच्छता व टापटिपीपणाला अधिक महत्व देतात. स्वभाव विनोदी असतो. विनयशीलता. हा यांचा मुख्य गुण, स्वभाव मनमिळावू बोलणे मधुर, लोभस व प्रिय असते, कशाही लोकांशी जुळवुन घेण्याची क्षमता असते, स्वाभावने शांत व आनंदी असले तरी जरा सुस्त व आळशी असतात. हे लोक जरासे लाजाळू असल्याने विरुध्द लिंगी लोकांत मिसळताना संकोच करतात, विशेष परिचयाशिवाय मोकळेपणाने बोलत नाहीत, त्यामुळे घमेंडखोर वाटतात. हे भावनाप्रधान नसतात त्यामुळे यांना प्रेमात विषेश रस नसतो. जोडीदाराबद्यलच्या अपेक्षा फार मोठ्या असतात. राहणीमान व सौंदर्यापेक्षा गुणांना अधिक महत्व देतात. 'चारित्र्य' ही यांच्यासाठी सर्वात महत्वाची गोष्ट या बाबतीत यांना तडजोड मान्य नसते. एखाद्यी बुद्धिमान, चतुर, गुणवान व चारित्र्य संपन्न व्यक्तीच यांना प्रेमात पाडू शकते. प्रेम हे मनापासून व निष्ठेने केलेले असल्याने त्यातून माघार घेणे यंना कठीण जाते. बहुतांशी कन्या राशीच्या लोकांचे पहिले प्रेम हेच त्यांचे शेवटचे प्रेम

ठरते. प्रेम ही अतिशय खाजगी गोष्ट मानतात, त्यामुळे त्याची चर्चा चारचौघात करत नाहीत. यांच्यात लफडी करण्याइतके धाडस नसते. बऱ्याच वेळा प्रेमही व्यक्त करण्याचे धाडस हे लोक दाखवत नाहीत.

तूळ राशीचे प्रेम -

तूळ ही शुक्र या ग्रहाच्या अधिपत्याखालील वायुतत्वाची चर रास आहे. ही रास शुद्ध प्रेमाचे प्रतिक मानली जाते. या राशीचे लोक प्रेमळ, मायाळू व भावनाप्रधान असतात. हे स्वत: मोहक व सुंदर असतात. यामुळे समोरील व्यक्तीला प्रभावित करण्यात नेहमीच यशस्वी होतात. हे लोक शांतताप्रिय असतात. सौंदर्याची, कलेची व ऐश्वर्याची नैसर्गिक आवड असते. यांना विरुद्ध लिंगी व्यक्तीचे विशेष आकर्षण असते. अशा लोकांत हे अधिक उत्साही असतात.. यांना पुष्कळ मित्र-मैत्रिणी असतात, असे असूनही हे लोक व्यभिचारी मात्र नसतात, हे सुसंस्कृत असतात. यांच्या प्रेमात सौंदर्य असते, संयम असतो व सावधपणाही असतो. हे लोक सुंदर दिसण्यासाठी सतत प्रयत्नशील राहतात. हे लोक सहवास प्रिय असतात. लैंगिकतेपेक्षा जोडीदाराबरोबय बोलणे, फिरणे, जोडीदाराच्या सहवासात राहणे यंना जास्त आवडते. समतोलपणा हा यांचा महत्वाचा गुण. कोणत्याही बाबतीत दुसऱ्याच्या मनाचा विचार करतात. इतरांच्या भावना दुखावणार नाहीत याची काळाजी घेतात. बऱ्याच वेळा जोडीदार निवडतांना मात्र सौंदर्य व मोहकतेला बळी पडतात. सुंदर व मोहक व्यक्ती ही यांची कमजोरी बनते. प्रणयातील अनेक खेळ करून जोडीदाराला सहज खूष करत असतात. जोडीदाराला नेमके काय हवे हे यांना चांगलेच ठाऊक असते. यांना सतत जोडीदाराचा सहवास लागतो, एकटे राहण्याचा यांना फारच कंटाळा येतो. हे लोक आपल्या जोडीदाराला कधीही असंतुष्ट अगर दु:खी ठेवत नाहीत.

वृश्चिक राशीचे प्रेम –

वृश्चिक ही मंगळ या ग्रहाच्या अधिपत्याखालील जलतत्वाची स्थिर रास आहे. या राशीचे लोक हे निश्चयी, कर्तबगार, मुत्सद्दी व धोरणी असतात. यांना अधिकाराची आवड असते. यांच्या व्यक्तिमत्वात एक गूढ मादकता असते, एक प्रकारची आकर्षण शक्ती असते ज्यामुळे लोक यांच्याकडे आकर्षित होतात. पण मत्सर, पाताळयंत्रीपणा व कमालीची गुप्तता पाळाणे हे या राशीचे काही अवगुण आहेत. यांच्या अंतर्मनाचा थांगपत्ता लावणे सर्वात कठीण काम असते. या राशीचे बरेच लोक हे आडमुठेपणा व कारस्थानीपणा करण्यात पुढेच असतात. आपल्याला जे हवे ते मिळालेच पाहीजे असे यांना वाटत असते. या राशींच्या लोकांचे प्रेमही असेच असते, प्रेमात यांच्या भावना अत्यंत तीव्र असतात. आपल्या भावनांवर ताबा ठेवणे यांना जरा कठीणाच जाते. समोरच्याच्या मनाचा विचार हे लोक क्वचितच करतात. हे प्रेमाच्या इतके आहारी जातात की स्पष्टपणाने विचार करणे कठीण होऊन जाते. प्रेम करतांना पुर्ण विचारांतीच जोडीदाराची निवड करतात, व त्यावर प्रेमाचा वर्षाव करतात. या राशीचे प्रेम हे बेधुंद करणारे असते. आपल्या जोडीदाराने केवळ आपल्यावरच प्रेम करावे अशी यांची भावना असते. यांच्या मर्जीतून उतरलेल्या लोकांकडे मात्र हे ढुंकुनही पहात नाहीत. प्रेमभंग पचविणे हे या लोकांसाठी जगातील सर्वात कठीण गोष्ट असते. प्रेमभंगाचे दु:ख हे यांच्यासाठी मरणापेक्षा भयंकर असते. एकतर्फी प्रेमाची उदाहरणे या राशीच्या लोकांत जास्त दिसून येतात. प्रेमाच्या बाबतीत हे कोणत्याही टोकाला जाऊ शकतात.

धनू राशिचे प्रेम -

धनू ही गुरु ग्रहाच्या अंमलाखाली येणारी अग्नि तत्वाची द्विस्वभावी रास आहे. या राशीच्या लोकांत महानता, प्रेमळपणा, महत्वकांक्षा व परोपकारीपणा हे गुरुचे गुण दिसून येतात. हे न्यायी व दिलदार असतात व यांना प्रवासाची विलक्षण आवड असते. हे लोक आशावादी व आनंदी असतात. यांना स्वातंत्र्याची व स्वायत्ततेची आवड असते, कुणाच्याही बंधनात अगर मर्यादेत राहणे आवडत

नाही. हिच गोष्ट प्रेमाच्या बाबतीतही लागू होते, त्यामुळे प्रेम संबंध टिकाऊ होण्यात अडचणी निर्माण होतात. प्रेमाच्या बाबतीत हे लोक आवेगी, उत्साही व भावनाशील असतात. सहज मिळणारे प्रेम यांचा उत्साह कमी करते. अपयशाला यशात बदलण्याचा सतत प्रयत्न करत असतात. समोरच्या व्यक्तीचा कमकुवतपणा अचूक टिपतात. हे मोकळ्या मनाचे असून यांना सहवास प्रिय मैत्री हवी असते. प्रेमाने भारलेले व आनंदाने बहरलेले हे लोक प्रेमात अगदी निर्धास्त होतात. या राशीच्या प्रेमात गरिब-श्रीमंत अगर उच्च-निच्च असा भेदभाव नसतो. प्रेम भंगाचे दु:ख मात्र हे लोक उदारपणे पचवितात व त्यावर मौन पाळातात. प्रेम-प्रणय हा यांच्यासाठी एक खेळ असतो. या राशिचे बरेच लोक विवाह पाशात न अडकण्याच्या सतत प्रयत्नात असतात. पण विवाहानंतर मात्र पत्नीशी अत्यंत प्रामाणिक वर्तन करताना दिसतात. संस्कृती व कुटुंब यांच्याबद्यल यांना नितांत आदर असतो. जोडीदाराने आपल्याबरोबर मित्राप्रमाणे वर्तन करावे अशी यांची अपेक्षा असते.

मकर राशीचे प्रेम –

मकर ही पृथ्वी तत्वाची चर रास असून या राशीचा स्वामी शनी आहे. व्यक्तिगत व सामाजिक प्रतिष्ठा, नांवलौकिक यांना मकर राशिच्या जीवनात अतिशय महत्व आहे. सर्व काही मिळविण्याची यांची ईच्छा असते, वर-वर जाण्याची महत्वकांक्षा असते. त्यामुळे हे लोक नेहमी शिस्तबद्ध, सावध व काटकसरीने वागताना दिसतात व जीवनातील लहान सहान आंदाचा उपभोग घेण्यास असमर्थ ठरतात. हे लोक थोडे स्वार्थीही असतात, आलेल्या प्रत्येक संधीचा फायदा करुन घेण्याची चालाखीही यांच्यात यांच्यात असते. हे लोक त्यांची स्तुती व प्रशंशेचे आतुर असतात. हे लोक शृंगार व प्रणय प्रिय असले तरी तसे उघड न दाखविता आपण पुराणमतवादी असल्याचे भासवितात. या राशीचे लोक स्वभावाने जरासे संकोची असल्याने सहजासहजी प्रेमात पडत नाहीत, व प्रेमात पडल्यास स्वत:हुन कधीच पुढाकार घेत नाहीत. समोरच्या व्यक्तिकडून प्रतिसाद मिळण्याची वाट पहात बसतात. जर समोरुन काहीच प्रतिसाद न आल्यास मनातल्या मनात प्रेम करत आयुष्यभर झुरत बसतात. पण एकदा का प्रेम झाले तर मात्र ते मनापासून करतात. प्रेमाची सतत पाठ राखण करतात. मकर ही वास्तववादी रास आहे स्वप्नाळू नाही. त्यामुळे त्यांचे प्रेम हे भारावलेले किंवा भावनेने ओथंबलेले नसते. वास्तववादी असल्याने हे लोक प्रेमात विषेश करुन फसत नाहीत. पण प्रेमभंग झालाच तर त्याचे दु:ख हे यांच्यासाठी खूपच त्रासदायक असते, यांच्या विश्वासाला तडाच जातो, त्यातून सावरणे कठीण असते व त्यानंतर दुसऱ्यावर विश्वास ठेवणे तर त्याहुन कठीण असते.

कुंभ राशीचे प्रेम –

कुंभ ही मकरेप्रमाणेच शनीची रास आहे. पण कुंभ ही वायुतत्वाची स्थिर रास आहे. पाश्चिमात्य ज्योतिष्यांच्या मते या राशिवर हर्षल या चमत्कारीक ग्रहाचा अंमल आहे. त्यामुळे या राशिच्या लोकांचे आकलन होणे जरा कठीणच असते. यांचा स्वभाव जरा चमत्कारीक व लहरी असतो. प्रत्येक बाबतीत वैज्ञानिक दृष्टीने पाहण्याचा प्रयत्न असतो. ही बौद्धिक रास आहे. या राशीचे लोक कुशाग्र बुद्धीचे, वैचारीक व विद्वान असतात. हे लोक नेहमी क्रियाशिल व महत्वकांक्षी पण स्वभावाने नम्र असतात. थोडेसे अंतर्मुख व एकांतप्रिय असतात. हे विश्वासू व ध्येयवेडे असतात. यांचा स्वभाव निस्वार्थी असतो. यांच्यात ज्ञानाची परिपक्वता असते, नियोजनपुर्वक व चिकाटिने कार्य करण्याची कुवत असते. हे लोक अभ्यासू असून यांच्यात संशोधक वृत्ती असते. या राशीचे लोक आपल्या भावना कधीही उघडपणे व्यक्त करत नाहीत. व्यक्तीगत प्रेमापेक्षा मानवतावादी प्रेमाकडेच यांचा अधिक कल असतो. हे लोक वैयक्तिक प्रेमापासून जरा अलिप्त राहणेच पसंद करतात. नाते संबंधात अडकून पडणे यांना नको असते. यांच्या प्रेमातसुद्धा एक वेगळेपणा पहायला मिळतो. यांचे प्रेम विचार जगावेगळे व जरा विचित्र असेच असतात. यांना प्रेमळ व विश्वासू जोडीदार हवा असतो. प्रेम जीवनात हे सुद्धा एकनिष्ठच असतात. त्यामुळे प्रेमभंग झाला

तर हे लोक पुन्हा त्यावाटेला कधीच जात नाहीत. यांना शृंगार व प्रणयाची विशेष अशी आवड नसते.

मीन राशीचे प्रेम -

मीन ही राशिचक्रातील शेवटची रास आहे. ही जल तत्वाची द्विस्वभावी रास असून या राशिचा स्वामी गुरु ग्रह आहे. यांचे व्यक्तीमत्व आकर्षक व मोहक असते. यांच्यात कलाप्रेम व अभिनय कौशल्य असते. ही अत्यंत संवेदनशील रास आहे. यांच्या दृष्टीने मनाच्या भावना व अंत:स्फुर्ती या गोष्टी अत्यंत महत्वाच्या, वास्तवतेला काहीच किंमत नाही. ही अत्यंत दुर्बल रास मानण्यात येते, या राशीचे बरेच लोक संघर्ष व स्पर्धा यांचा ताण झेलू शकत नाहीत. या राशीचे लोक स्वप्नाळू व अत्यंत भावूक असतात. यांना कशाचीही फारशी चिंता नसते. यांची निर्णय क्षमता कमी असून यांच्यात चंचलता व अस्थिरता अधिक असते, मात्र कोणत्याही परिस्थितीशि जूळवून घेण्याची क्षमता असते. सकारात्मक कार्य कराण्याऐवजी स्वप्नात वापरत असतात. त्यामुळे अनेकदा हातची संधी गमावून बसतात. शृंगार व प्रणयाची विशेष आवड असते. सौंदर्याचे भोक्ते असतात. प्रेमी म्हणून यशस्वी ठरतात, पण समोरुन सतत प्रोत्साहनाची गरज भासते. स्वभाव जरा भित्रा असल्याने सतत प्रोत्साहनाची गरज लागते. जोडीदाराबद्यल प्रेम, आपुलकी व अभिमान असतो. संभाषण चातुर्य ही यांची जमेची बाजू असते. यांच्या कामवासना अतिशय तीव्र असतात, पण यांचे प्रेम उग्र नसते त्यात शितलता असते. प्रेम हे यांच्यासाठी श्रद्धा असते. यांनी जोडीदारा विषयीच्या कल्पना अगोदरच रंगवलेल्या असतात, व त्याचा ते शोध घेत असतात. बऱ्याचदा यांचं प्रेम आंधळ असतं. कोणीही आपली दर्दभरी कहाणी सांगून यांना आपल्या प्रेमात पाडू शकते. कुणीही यांना जरासा आधार दिला तरी हे त्यांच्या प्रेमात पडू शकतात. जोडीदाराचा थोडासा दुरावाही यांना असह्य ओतो तेथे प्रेमभंगाच्या दु:खाची केवळ कल्पनाच केलेली बरी.

HOROSCOPE......BELIEVE OR NOT....????

By – Vrushali N.
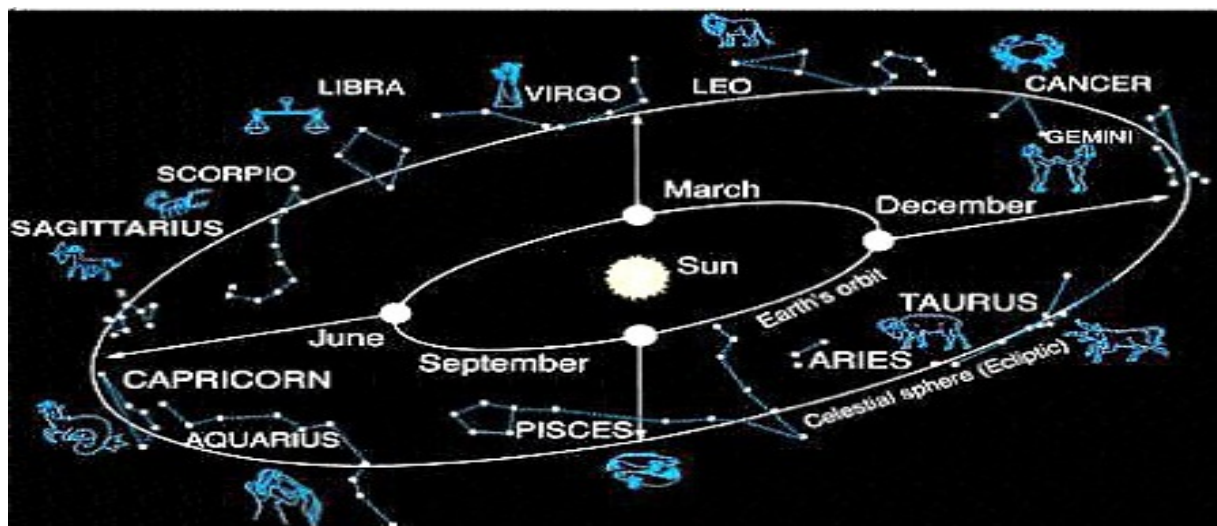
Life .... is full of fascinating things...

Science tells us how this world and life came into existence.
But why is this produced? What's the purpose?
All these questions are answered in different fields Astrology.

From childhood i have a curiosity about this field. And I receive most of the answers in my horoscope.

In this journey so far I came across different type of people, different types of views regarding astrology. In general we can majorly divide the people in three categories –

1) Strong believers of astrology
2) Non believers of astrology
3) People don't bother at all about it.

Today I would like to share few aspects regarding astrology. Whenever we think of the term astro what we see is our horoscope. Our horoscope is the strong base astro world.

HOROSCOPE ....this gives us the picture of the positions of all planets in the sky at the time of our birth.
Whatever happens in our life is according to this horoscope. Whether you believe or don't, this doesn't make any difference in the basic journey of your life.
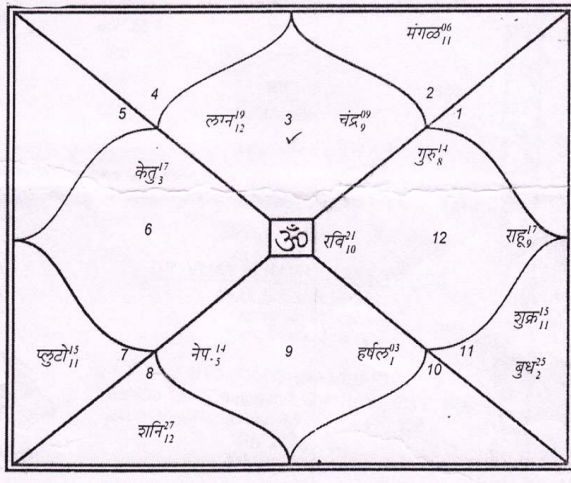
So now let’s see what the significance of this horoscope is. What role this exactly plays in our life? This horoscope serves as the lighthouse in journey of our life.

Astrologers are the people who serve us to reveal the meaning of our horoscope. They are not magicians, nor are they story teller.

Let me give one example. There’s one lady with an average look. Someone suggests her to make few changes in her dressing, hairstyle and so on. This brings the miraculous change in this lady.

On other hand someone is born with full beauty but she ignores and this hides her beautiful features.

Here basic format of the body remains same. But the timely change made as per the suggestions brings too many positive changes. Same is the job of horoscope and astrologers. They make us aware of the basic features as well as the changes require.

I come across one more question... when my good time will come?

Now let’s have a look on one more example. We plan a tour, decide one destination. For that we do all required pre-preparations. We go to the railway station, but we have to wait till the train arrives. Even if the train delay by few hours, we don’t cancel the plan. We prefer to wait there till the train arrives to take us to our destination. Same is the case of the journey of our life. Have patience. Time will surely lead us to our destination.

Our horoscope is our guide line. It only tells us the best route for us. And all is left to us. It makes us aware of all the ingredients in our hand and leaves to us what best recipe we can make out of it.

Vrushali N.
Tarot Reader
9663454836
vrushalivs@gmail.com

ग्रह बलनिरुपण

कुंडली में ग्रहोंका बल जाननेके अनेक प्रकार या विधा बताए गए है। अष्टकवर्ग, विंशोपिका बल, वर्ग बल इ. प्रकार से ग्रहोंके बल जाने जा सकते है। इन सभी प्रकारके बल जाननेके लिए ज्योतिष गणित का अच्छा अभ्यास होना जरुरी है। इन तरिकोंके आलावा भी ज्योतिष शास्त्र में ग्रहोंके बल जाननेके कुछ सरल नियम बताए गए है। ये नियम मूलभूत, मौलिक और महत्वपूर्ण है। इन नियमोंके जरिए बिना ज्यादा गणित किए काफी सरलतासे ये जान सकते है की, कोनसा ग्रह कब बलवान होता है और कब बलहीन होता है। यँहा पर ये स्पष्ट कर दू की, ग्रह बलवान या बलहीन होना अलग बात है और ग्रह शुभ या अशुभ होना अलग बात है। इस लेख में ग्रहोंके बल पर विचार किया गया है , शुभाशुभत्व पर नहीं। निचे दिए गए नियम पृथुयश विरचित "होरसार" ग्रंथ से लिए गए है।

सूर्य उत्तरायण में, अपनी राशि, नवांश, द्रेष्काण तथा होरा आदि में बलवान होता है। सूर्य दिवा बली मित्र राशि में होने के कारण मध्यम बली हो जाता है। सूर्य रविवार को और अपनी उच्च राशि में होने पर भी बलवान होता है। राशि के उदय में पूर्ण बली, मध्यम अंश में मध्यम मध्यम बली और अन्तिम अंशों पर होने से सूर्य बलहीन हो जाता है। सूर्य अपनी गति एवम् अंशानुसार बलहीन तथा अस्त भी होता है।

चम्द्रमा वृष राशि में होने पर बलवान होता है। चन्द्रमा दक्षिणायन में, अपनी राशि में होने पर, अपने होरा, द्रेष्काण और सोमवार को भी चन्द्रमा बलवान होता है। शुक्ल पक्ष के प्रतिपदा से लेकर दशमी तक मध्यम बली, शुक्ल एकादशी से लेकर कृष्ण पंचमी तक पूर्ण बली और षष्ठी से लेकर अमावस्या तक यह बलहीन हो जाता है। जब चन्दमा उत्तर में रहे और घडी के गति से चले या वह किसी ग्रह के साथ रहे या उससे दृष्ट हो तो यह बलवान हो जाता है। चन्द्रमा राशि के प्रारम्भ से १० अंश तक बलहीन, ११ से २० अंश तक मध्यम बली और २१ से ३० अंश तक पूर्ण बली हो जाता है।

मंगल दक्षिणायन के राशि में, रात्रि में, मकर-कुम्भ और मीन राशि में होने पर, युद्धरत होने पर तथा तीव्र गति में होने पर बलवान होता है। मंगल अपनी उच्चराशि में, स्वक्षेत्री होने पर, स्वाराशिस्थ होने पर और अपने द्रेष्काण में रहने पर भी बलवान होता है। जब मंगल दसवें भाव में अपनी राशि का रहता है या अन्य किसी भी राशि में रहता है तब वह बलवान हो जाता है। मंगल राशि के प्रारम्भ में १ से १० अंशों तक पूर्ण बली, ११ से २० अंश तक कमजोर और २१ से ३० अंश तक मध्यम बली हो जाता है।

बुध सूर्य से १० अंश की दूरी पर रहने से बलवान हो जाता है। बुध अपनी राशि, नवांश, अपने द्रेष्काण में, उत्तरायण में, दिन और रात्रि में बलवान हो जाता है। बुध वक्री गती में होने पर भी बलवान हो जाता है। राशि के प्रारम्भ से १० अंश तक मध्यम बली, ११ से २० अंश तक पूर्ण बली तथा २१ से ३० अंश तक बुध बलहीन हो जाता है। मिथुन राशि का भी बुध यदि अपने द्रेष्काण मे रहे तो बलवान हो जात है।

बृहस्पति अपनी राशि मे, कर्क या वृश्चिक राशि में, उत्तरायण में, दोपहर में, अपने द्रेष्काण तथा नवांश में भी बलवान हो जाता है। बृहस्पति किसी भी ग्रह के साथ विजयी मुद्रा में रहने पर भी बलवान हो जाता है। बृहस्पति १ से १० अंश तक मध्यम बली, ११ से २० अंश तक पूर्ण बली तथा २१ से ३० अंश तक बलहीन हो जाता है।

शुक्र तीसरे, छठे और बारहवें भाव में होने पर, सूर्य से आगे होने पर , दोपहर में और वक्री होने पर भी बलवान हो जाता है। शुक्र अपनी राशि में उच्च राशि का होकर उत्तरायण में होने से बलवान हो जाता है। शुक्र राशि के प्रारम्भ के १ से १० अंश तक बलहीन, ११ से २० अंश तक पूर्ण बली और २१ से ३० अंश तक मध्यम बली होता है। शुक्र, चन्द्रामा के साथ होने पर और ग्रहों के साथ विजयी मुद्रा में होने पर भी बलवान हो जाता है।

शनि कृष्णपक्ष मे, रात्रि में, वक्री होने पर, अपनी राशी में, उच्च राशि तुला में होने पर, दक्षिणायन में और रात्रि में उदय के समय में बलवान होता है। शनि लग्न में बैठकर किसी भी धीमी गति वाले ग्रहों के साथ बैठकर और विजयी मुद्रा में होने पर भी बलवान हो जाता है। शनि राशी के प्रारम्भ के १ से १० अंश तक बलहीन, ११ से २० अंश तक मध्यम बली और २१ से ३० अंश तक पूर्ण बली हो जाता है। अन्य आचार्यों का मत है कि शनि हमेशा बलवान होता है।

राहु मेष, वृष, कर्क, वृश्चिक और कुम्भ राशि का होने पर बलवान होता है। राहु मेष, और चन्द्रामा के साथ होने पर तथा राशि की समाप्ति में सूर्य और चन्द्रामा की परिधि में होने पर बलवान होता है।

केतु धनु राशि के उत्तरार्द्ध में ,मीन, कन्या और वृश्चिक राशि में तथा कन्या राशि में भी बलवान होता है। केतु राशि के प्रारम्भ में तथा इन्द्रधनुष के उदय के समय में भी बलवान होता है।

शुभ ग्रह यदि बलवान होता है तो वह व्यक्ति को निश्चय ही भाग्यशाली, ज्ञानी, सुन्दर तथा सम्पन्न बनता है तो दूसरी तरह पापग्रह बलवान होकर के व्यक्ति को मूर्ख, अज्ञनी तथा भाग्यहीन बनाता है एवम् अपने अनुरुप फल देता है।

सन्दर्भ - होरासार

सूर्यावरील डाग - सौर डाग

[बृहद संहितेत वराहमिहिराने सूर्यावरील डागांचे वर्णन आहे. हे डाग विशिष्ट कालावधीत विशिष्ट काळासाठी दिसतात असे त्यांचे मत आहे. जातक शास्त्रात याचा फलादेशासाठी फारसा उपयोग होतो असे दिसत नाही. पण मेदनिय ज्योतिषात खास करून हवामानाविषयी फलादेश करताना याचा विचार केल्यास अचूकता साधता येते असे दिसते. आधुनिक शास्त्रज्ञ व हवामान विशेतज्ञ याचा विचार करतात असे आढळते.]
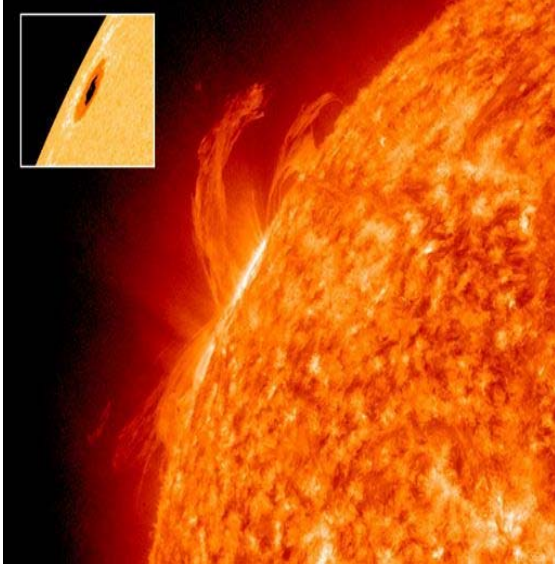
दुर्बिणीने सुर्यावर अनेक काळे डाग दिसतात. एखादा डाग इतका मोठा असतो की, तो नुसत्या डोळ्यांनीही दिसतो. या डागांचे ज्ञान पूर्वीच्या ज्योतिष्यास असावे असे खात्रीने वाटते. बृहत्सांहितेत सूर्याला पर्वणि ग्रहण लागते असे वर्णन आहे ते असे-

सतमस्कं पर्वविना त्वष्टा नामार्कमण्डलं कुरुते ॥
स निहन्ति सप्तभूपान् जनांश्च शस्त्राग्निदुर्भिक्षैः ॥

त्वष्टा नामक ग्रह पर्व दिवसावाचुन अन्य दिवशी जेव्हा सूर्यमंडल अंधकरयुक्त करितो, तेव्हा (नक्षत्रकूर्माध्यायात सांगितलेले) सात राजे मरण पावतात. त्याचप्रमाणे शस्त्र, अग्नि व दुष्काळ यांच्या योगाने लोकांचाही नाश होतो.

हा त्वष्टा नामक ग्रह कोण असवा बरे? हा ग्रह सूर्यबिंब आच्छादन करितो असे यात वर्णन आहे. पर्वकाली म्हणजे पौर्णिमा व अमावास्या या दिवशी ग्रहणकाली जशा प्रकारची चंद्रसूर्याची बिंबे काळी होतात तशीच हा ग्रह सूर्याच्या व चंद्राच्या आढ आला असता काळी होतात असे पराशराचे आहे. तो म्हणतो-

अपर्वणि शशांकार्कौ त्वष्टा नाम महाग्रहः ॥
आवृणोति तमः श्यामः सर्वलोकविपत्तये ॥

सुर्यावरील डागाचे हे वर्णन म्हणावे तर चंद्रालाही तो ग्रह ग्रहण करितो असे पराशर म्हणतो. परंतु वराह फक्त सूर्यालाच तो आच्छादितो असे म्हणतो. यावरुन हे वर्णन डागाचे असू शकेल.

तामसकीलकसंज्ञा राहुसुताः केतवस्त्रयस्त्रिंशत् ॥
वर्णस्थानाकरैस्तान दृष्टार्के फलं ब्रूयात ॥

तामसकीलक नावाचे राहूपुत्र धूमकेतु ३३ आहेत. ते सूर्याच्या आड येतात त्यावेळी त्याच्या बिंबावर उमटलेला रंग, त्या बिंबावरील जागा आणि त्यांचा दिसणारा आकार हे अवलोकन करुन फले सांगावी असे वराहमिहिर म्हणतो. परंतु पुढे तो हे डाग चंद्रावरही दिसतात असे दर्शवितो.

ते चार्कमंडलगताः पापफलाश्चन्द्रमंडले सौम्याः ॥
ध्वांक्षकबन्धप्रहरणरूपा पापः शशांकेऽपि ॥

त्या तामस कीलक केतूंनी सूर्यबिंब आच्छादिले तर अनिष्ट फल प्राप्त होते व चंद्रबिंब आच्छादिले तर शुभ फल प्राप्त होते. त्यांचा कावळा, मुंडके, खड्ग, शस्त्र वगैरे आकार चंद्रामंडलावर दिसला तर मात्र अनिष्ट फल मिळते. सुर्य मंडलावर कसेही दिसले तरी अशुभच असतात.

ही वर्णने सुर्यावरील डागांचीच असावी. चंद्रमंडल या डागांनी किंवा दुसऱ्या कशाने काळे झालेले अद्यापि कोणाच्या पाहण्यात नाही. ती वराहादिकांची कल्पना असावी. अलीकडील शोधांवरुन सर्व डागांची आकृति सारखी नसते, काही डाग काही दिवस दिसून नाहीसे आणि काहीतर काही महिने दिसत असतात, काही डागांचे क्षेत्रफळ कोट्यावधि मैल असते, डागांचा मध्यभाग फार काळा दिसतो आणि भोवताली काळसर जागा दिसते. हे डाग एखाद्या वर्षी फार दिसतात, एखाद्या वर्षी थोडेच दिसतात, वर्षात मुळीच डाग दिसला नाही असे कधीच होत नाही, एकदा डाग फार दिसले तर पुन: सुमारे ११ व. ३ म. इतक्या काळाने फार दिसतात असे समजले आहे. हे वर्णन व वराहाचे वर्णन यात पुष्कळ साम्य आहे.

सूर्याच्या डागांच्या कालचक्रास अनुसरुन धान्यादिकांचे भाव कमी जास्त होतात. डाग कमी दिसतात तेव्हा सूर्यकिरण पिकास अनुकूल असतात असे हर्शलचे मत होते. कै. केरोपंत छत्रे यांनी याबद्दल पुष्कळ विचार केला होता, असे दीक्षित लिहितात. पावसाशी व दुष्काळाशी डागांचा संबंध आहे असे त्यांचे अनुमान आहे. मद्रास तेथील वेधाशाळेचे मुख्य अधीकारी पागसन यांचे मत आसे होते की डागांप्रमाणे कर्नाटकाच्या पावसात फरक पडतो असे दीक्षीतांनी लिहीले आहे.

सूर्य याच कारणाने पापग्रह आहे. जेव्हा असे मोठाले डाग दिसत असतील त्या वेळी जन्मणाऱ्यावर त्यांचा अनिष्ट परिणाम घडत असेल. यासाठी हे ज्ञान ज्योतिष्याला अवश्यमेव संपादन केले पाहिजे व त्यासाठी एक वेधशाळाही पाहिजे. याचकरीता सुर्य शुभ आहे व अशुभही आहे.

कै. श्री विष्णू गोपाळ नवाथे यांच्या "सुलभ जातक -५" मधून साभार .

लेख आमंत्रित आहेत.

नमस्कार ,

आपले स्वागत आहे. ज्योतिष, वास्तुशास्त्र, सामुद्रिक शास्त्र, अंकशास्त्र, डाऊजिंग, टॅरो, रेकी, रमल अध्यात्म, धर्म, संस्कृति, आयुर्वेद इ. व यासारख्या कोणत्याही विषयावर आपण लेख (मराठी/ हिंदी/ English यापैकी कोणत्याही भाषेत) लिहू शकत असाल तर तुमच्या लेखांचे स्वागत आहे, आम्ही ते तुमच्या नांव व फोटोसहीत आमच्या मासिक व वेबसाईट वरून प्रसिद्ध करु, जास्तीत जास्त लोकांपर्यंत पोहचवू. जर तुमच्याकडे वरील विषयावर ज्ञान असेल, अभ्यास असेल, अनुभव असेल व ते शब्दात मांडण्याची प्रतिभा असेल तर मग तुम्ही लेख लिहून आमच्या कडे पाठवा. अथवा आपले लेख वेबसाईट वर upload करू शकता.

अटी व नियम –

आपले लेख MS word File मध्ये (जरुरी असल्यास जरुरी त्या image वापरुन) खालिल Email वर पाठवून द्यावे.

आपण आमच्याकडे पाठवत असलेले लेख मात्र इतर कोठेही (फेसबुक अथवा इतर सोशल मीडियावर) प्रसिद्ध करू नये हवी असल्यास त्याची लिंक शेअर करावी.

लेख स्वतः लिहिलेले असावेत. इंटरनेट वरील कॉपी/पेस्ट पोष्ट चालणार नाहीत.

जर लेखातील काही भाग इतर ठिकाणाहून (पुस्तक अगर ब्लॉग) घेतला असल्यास संदर्भ म्हणून तसा त्याचा उल्लेख करावा. जर लेख पूर्ण भाषांतरीत असेल तर मूळ लेखाचा, लेखकाच्या नांवासहीत उल्लेख करावा.

धन्यवाद .

ज्योतिष जगत

Mail us - articles.jyotishjagat@gmail.com

Or Upload on

www.jyotishjagat.com

भारतीय ज्योतिषशास्त्राचा इतिहास (संक्षिप्त)

ज्योतिष म्हणजे कालामपनाचे व कालज्ञानाचे शास्त्र. मानवाच्या बुद्धीतून प्रगट झालेले ते पहिले शास्त्र आहे. वादळ, पाऊस, भूकंप, सूर्योदयादी दिन विभाग किंवा ऋतु यांचे पूर्वज्ञान अनेक पशुपक्ष्यांना होत असते हे निसर्गनिरीक्षण करताना आजही आपल्या लक्षात येते. आगामी नैसर्गिक घटनांची आधीच कल्पना येण्याचे बैद्धिक साधान आदीम मानव प्राण्यामध्येही असणार हे उघड आहे. इतर प्राणी व माणूस यातील पहिले वेगळेपण म्हणजे भाषा! पशुपक्षी कंठातून निघणाऱ्या आवाजातून किंवा विशिष्ट खाणाखुणा करुन (मधमाशांचे नर्तन) आपल्या भावना वा माहिती आपल्या गटातील इतरांना कळवितात. मुकी माणसे, लहान अर्भके व आदीम जमाती ध्वन्यात्मक भाषा काढतात. पण प्रगत माणूस जिभेच्या व मुखविवरातील दात, ओठ इत्यादी इतर अवयवांच्या साह्याने कंठातून येणाऱ्या स्वराला विशिष्ट शब्दांचा आकार देतो. या भाषेमुळे माणसाचे ज्ञान समृद्ध होत गेले. ज्योतिष आणि आयुर्वेद किंवा वनस्पतींचे औषधी ज्ञान ह्या मानवाच्या जीवन मरणाशी निगडीत शास्त्रांचा उगम व वाढ, हा मानवी विकासातील पुढचा टप्पा होय. अशा संकलित ज्ञानातून ग्रंथ निर्मिती होत जाते. जे छापले जाते त्यालाच ग्रंथ म्हणतात, असा संकुचित अर्थ येथे अभिप्रेत नाही. जगभर सध्या उपलब्ध असलेल्या अशा वाङ्मयात वेद हे सर्वात प्राचीन मानले जातात. पण प्राचीन किंवा आद्य म्हटले की त्यात मानवाच्या रानटी किंवा भोळसट कल्पना, फक्त देवदेवतांच्या स्तुती व उपासना एवढेच असते वा आहे, असे समजण्याचे कारण नाही.

आपल्या देशात ज्योतिषशास्त्र ज्ञानाची संपत्ती किती आहे याची कल्पनाही आमच्या लोकांस प्रस्तुत नाही. ही विलक्षण ज्ञानसंपत्ती पाहून प्रत्येक वाचक आशचर्याने थक्क झाल्याशिवाय राहणार नाही. ज्योतिषशास्त्र वृद्धीचा इतिहास वाचून आपल्या पूर्वजांचे विलक्षण प्रयत्न, शोध, जिज्ञासा कळून त्यांची योग्यता लक्षात येऊन मन आनंदाने उचंबळून जाईल

- शंकर बा. दीक्षित

वेदातील ऋचा व मंत्र उद्‌अगाते अनेक ऋषी आहेत. हे मंत्र किंवा ऋचा समाधी अवस्थेत स्फुरल्यामुळे ही रचना आपली नसून ईश्वराची आहे अशी या ऋषींची दृढ भावना आहे. वेद ईश्वराकडूनच प्राप्त झाले असले तरी ईश्वराची ही जाणीवपूर्क निर्मिती नाही. माणूस श्वास घेतो, त्याचे हृदय चालू असते या आपोआप चालणाऱ्या क्रिया आहेत. माणूस घोरतो, स्वप्नात बडबडतो याही नेणिवेतील क्रिया आहेत. आपण असे बोललोच नाही असे तो ठामपणाने म्हणू शकतो. वेदांना ईश्वरेच्छा असे म्हणत नाहीत तर ईश्वराची निश्वसीते मानतात. ज्ञानेश्वरांनी वेद म्हणजे ईश्वराचे घोरणे म्हटले आहे. या अर्थाने वेद हे अपौरुषेय मानले जातात. या श्रद्धेपोटी आणि हे मंत्र म्हणण्याच्या विशिष्ट पद्धतींमुळे (यांना विकृती असे पारिभाषिक नाव आहे) हे साहित्य हजारो वर्षे कानामात्रेचा फरक न होता पिढ्यामागून पिढ्या संक्रमित होत आपल्यापर्यंत पोहोचले आहे. या पद्धतीतून एक दोष अपरिहार्यपणे राहिला तो म्हणजे पद्धतशीर मंत्रपठण हाच आजीवन अभ्यासाचा विषय असल्यामुळे मंत्रपाठकांना अर्थाकडे लक्ष देता आले नाही. या मंत्रांचा अर्थ माहीत असलेले व सांगणारे आचार्य कमी कमी होत गेले. मंत्रांचे मूळ अर्थ व संकल्पना यावर आजच्या ज्ञानाच्या साह्याने भाष्य करण्याचा प्रयत्न हल्ली होत आहेच व त्यावरुन वैदिक मंत्र व ऋचा म्हणजे केवळ देवदेवतांची स्तुती नसून निसर्गनियम व निसर्गाची गूढतत्त्वे उकलण्याचा प्रयत्न आहे, हे स्पष्ट होत आहे. मात्र आपल्या बौद्धिक मर्यादांमुळे काहीवेळा नवीन शोध जाहीर

झाल्यांनतर गूढ वा निरर्थक, देवस्तुतीपर वाटणाऱ्या ऋचेचा खरा अर्थ आपल्याला प्रतीत होतो. त्यामुळे अनेक लोकांची अशी दृढ समजूत आहे की गेल्या दोन अडीचशे वर्षात पाश्च्यात्य विद्वानांनी आपले ग्रंथ नेऊन तिकडे त्यांचा अभ्यास केला व त्यातून मग शोध लावले किंवा नवीन शोधाची बीजे त्यांना या ग्रंथात मिळाली. आपल्याकडेही गणेश अथर्वशीर्ष सूक्तातून मुद्रण कलेविषयी नवीन कल्पना श्री. वाकणकर यांनी त्यांच्या 'गणेशविद्या' ग्रंथात मांडल्या आहेत. शंकराचार्यानी वैदिक गणिताची अभिनव सूत्रे सांगितली आहेत. तैत्तिरीय उपनिषदातील ज्योतिष सूत्रांवर पुढे भाष्य आहेच, वेद हे ज्योतिषाशी अधिक निगडीत आहेत. देव हा शब्द द्युती म्हणजे प्रकाश या शब्दातून आलेला असून आकाशातले प्रकाशमान गोलक म्हणजेच देव किंवा स्वर्गलोकी गेलेले पितर होत अशी कल्पना आहे. इंद्र वरुणादी देवता खगोलीय बिंदू आहेत हे सुरुवातीला आपण पाहिलेच.

भारतीय ज्योतिषशास्त्राचे सिद्धान्त, संहिता आणि होरा असे तीन स्कंध किंवा भाग आहेत.

सिद्धान्त संहिताहोरारुपं स्कंधत्रयात्मकं ।
वेदस्य निर्मलं चक्षुज्योतिःशास्त्रमनूत्तमं ॥

-

नारदसंहिता १. ४

सिद्धान्तालाच तंत्र व गणितही म्हणतात. यात कालमापनाची व त्या दृष्टीने ग्रहांची स्थितिगतीविषयक गणिते यांचा समावेश आहे. ही गणिते, १) कल्पारंभापासून. २) महायुगापासून (तंत्र) किंवा, ३) शंकारभांपासून (करण) अशी तीन प्रकारची आहेत. मध्यमाधिकार, स्पष्टाधिकार, प्रश्नाधिकार (अधिकार म्हणजे ग्रहगणित) चंद्र-सुर्य ग्रहणे, उदयास्त, ग्रहयुति, नक्षत्रग्रहयुति, शृंगोन्नति इत्यादी प्रकारणे सिद्धान्त ग्रंथात असतात. संहिता ग्रंथात ग्रह व उल्कापात, धुमकेतु, सौरडाग, संवत्सरारंभ इत्यादींमुळे एकंदर पृथ्वीवर व मानवी जीवनावर काय परिणाम होतील या विषयांचा समावेश होतो. तर होरा किंवा जातक यात या ग्रहादिकांचे व्यक्तिगत मानवी जीवनावर काय परिणाम होतात त्याचा विचार होतो.

भारतीय तत्त्वज्ञानात काळ हा ईश्वरस्वरुप, सृष्टीचा नियंता मानला गेला आहे. सर्व मानवी व्यवहार हे कालमानानुसारच होऊ शकतात. दिवस, मास, वर्ष ही कालमापनाची स्वाभाविक साधने आकाशातील चमत्कारांवर अवलंबून असतात. ऋग्वेदाच्या वेदांग ज्योतिषात पहिल्याच मंगलाचरणात..

पंचसंवत्सरमयं युगाध्यक्षं प्रजापतिम् ।
दिनत्वर्यनमासांग प्रणम्य शिरसा शुचि ॥
प्रणम्य शिरसा कालमभिवाद्य सरस्वतीं ।
कालज्ञानं प्रवक्ष्यामि लगधस्य महात्मन:॥

“दिवस, ऋतु, अयन, मास ही ज्याची अंगे आहेत अशा पंचसंवत्सरमय युगाध्यक्ष आणि सरस्वतीस अभिवादन करुन महात्मा लगधाचे कालज्ञान सांगतो” असे म्हटले आहे.

सूर्य हा द्यु लोकात, देव म्हणजे तारका त्याच्यावरच्या म्हणजे स्वर्ग भागात असून पृथ्वी व द्यौ यामध्ये अंतरिक्ष लोक असतो. अंतरिक्षात मेघ, वायु, विद्युत आदींचा संचार असतो. चंद्र हा सुर्याच्या खाली म्हणजे अंतरिक्ष लोकात आहे. सूर्य एकाच मार्गाने नेहमी जातो आणि ऋतूंचे नियमन करुन पृथ्वीच्या पूर्वादि दिशा निर्माण करतो. पृथ्वी गोलाकार आणि निराधार आहे. सूर्य चंद्राशिवाय पांच ग्रह आहेत. इत्यादी माहिती वेदांमध्ये ठिकठिकाणी आलेली आहे.

कालज्ञान सर्वांना चांगल्या प्रकारे होणे कठिण असते. यज्ञाची सांगड घालून ही अडचण दूर केली आहे. ऋग्वेदात तिष्य (पष्य), चित्रा, रेवती, अघा (मघा), अर्जुनी नक्षत्र नामे आहे. तैत्तिरीय श्रुतीत, नक्षत्रांची नावे व देवता दिल्या आहेत. ज्योतिष वेदांचे अंग; वेदांचे चक्षु म्हणजे नेत्र मानले

आहेत. (छंद-पाय, व्याकरण-तोंड, कल्प-वाणी, शिक्षा-नाक, निरुक्त-कान).

विनैतदखिलं श्रोतस्मार्त कर्मं सिध्द्यति ।
तस्माज्जगहितात्येदं ब्रह्मणा रचिता पुरा ॥

- नारद संहिता अ. १ श्लो.७

याच्या शिवाय संपूर्ण श्रुति स्मृतिमध्ये सांगितलेले कर्म सिद्ध होत नाही, म्हणून ब्रह्माजीनी सर्वप्रथम या शास्त्राची रचना केली. असे नारदसंहितेत म्हटले आहे.

होराशास्त्राची बीजे :

नक्षत्र तारकांचे शुभाशुभत्व हाच फलज्योतिष तसेच संहिता स्कंधांचा पाया आहे व तो ऋग्वेदासह सर्व वैदक वाङ्‌मयात स्पष्ट दिसतो.

अथो नक्षत्राणामेषामुपस्थे सोम आहित:॥

नक्षत्रात सोम ठेवला आहे. या अर्थी ऋग्वेद सं. १०. ८२. २ व इतरत्र उल्लेख आहेत. प्रजापतीची मुलगी सुर्या सोमाला दिली त्यावेळी ज्या गाई दिल्या त्या मघा नक्षत्री घरी नेल्या आणि कन्या अर्जुनी (फल्गुनी) नक्षत्री नेली. अशी कथा आहे. यात कोणते कर्म केव्हा करावे या नंतरच्या ज्योतिष सूत्रांचे मूळ दिसते. फल ज्योतिषाचे निश्चित गमक अथर्ववेद संहितेत मिळते. माणसांच्या सुखदु:खांशी नक्षत्रांचा व ग्रहांचा निकटचा संबंध आहे, किंबहुना माणसाच्या भाग्याचे व दौर्भाग्याचे कारकत्व नक्षत्रांकडे अहे, निदान त्यांचा माणसाच्या जीवनावर शुभाशुभ परिणाम होतो अशी निश्चित समजूत अथर्ववेदकाली होती. अथर्व ज्योतिष संहितेचे १६२ श्लोक आहेत त्यात कालमापन आहे. तसेच शंकूच्या छायेनुसार ८ वेगवेगळे (रौद्र ते अभिजित) मुहुर्त आहेत. रौद्रावर रौद्र तर मैत्र मुहुर्तावर मैत्रकर्मे करावी. तिथिचे नंदा, भद्रा, जया, रिक्ता व पूर्णा हे वर्गीकरण व शुभाशुभत्व, वार व अधिपतींचा उल्लेख आहे. "जन्म संपद्विपत्क्षेम्य: प्रत्वर: साधकस्तथा । नैधनो मित्रवर्गश्च परमो मैत्र एवच" अशी २७ नक्षत्रांची नऊ गटात शुभाशुभ विभागणी केली आहे.

वैदिक ग्रंथानंतर स्मृती ग्रंथात ज्योतिषशास्त्र अधिक विकसित झाले. मनुस्मृतीत सांगितलेली युगपद्धतीच ज्योतिष व पुराण ग्रंथातून दिलेली असते. याज्ञवल्क्य स्मृतीत ग्रहयज्ञात 'सुर्य सोमो महीपुत्र: सोमपुत्रो बृहस्पति शुक्र शनिश्चरो राहु: केतुश्चेते ग्रहा: स्मृता:' अशी ग्रहांची नावे आहेत ती वारांच्या क्रमाने आहेत. या स्मृतीत राशींचा नामोल्लेख नाही पण क्रांतिवृत्ताचे बारा भाग कल्पिलेले आहेत. व्यतिपातादियोग अगस्ति, सप्तर्षी यांचा निर्देश आहे तसेच "यस्य यश्च ग्रहो दुष्ट: स तं यत्नेन पूजयेत (१.३०६) असे म्हटले आहे. " ग्रह जर अनिष्ट असले तर त्यांची प्रयत्नपूर्वक पूजा करावी " असा हा निष्कर्ष आहे. महाभारत व रामायण या इतिहास ग्रंथात ज्योतिषाचे बरेच उल्लेख आहेत. महाभारतात राशींचे उल्लेख नाहीत. पण रामायणात रामजन्माचे वेळी सर्व ग्रह उच्चीचे होते असा राशीनिर्देशित उल्लेख आहे.

सिद्धान्त अथवा ज्योतिर्गणित -

ज्योतिर्गणितात अगदी पहिले ज्ञात ग्रंथ म्हणजे सूर्यासिद्धान्तादि पाच सिद्धान्त होत. वराहमिहिराने पौलिश, रोमक, वसिष्ट, सौर आणि पितामह अशा पाच सिद्धान्तांची नावे दिली आहेत. पूर्ण ज्योतिष ग्रंथ उपलब्ध असलेला वराह मिहिर हा आद्य भारतीय ज्योतिष ग्रंथकार मानला जातो. त्याचे सिद्धान्त, संहिता व होरा या तीन्ही स्कंधावर ग्रंथ आहेत. बृहत संहिता हा त्याचा ग्रंथ म्हणजे भारतातील पहिला विश्वकोषच आहे. दीक्षितांच्या मते त्याचा जन्म शके ४०७ (इ.स. ४८५) आहे. (मात्र काहींच्या मते वराहमिहीर विक्रमादित्याच्या पदरी होता. म्हणजे इसवी सनापूर्वी वराहमिहिर होऊन गेला.) आर्यभट हा वराहमिहिरापूर्वीचा असला तरी त्याचा पूर्ण ग्रंथ उपलब्ध नाही. आपला जन्म शक त्याने ३९८ (इ.स.४७७) दिला आहे.

सांप्रत जो सूर्यसिद्धान्त वापरला जातो तो या नंतरचा असावा. त्याव बरेच टीका ग्रंथ उपलब्ध आहेत, वराहमिहिराच्या ग्रंथावर भटोत्पल याची टिका प्रसिद्ध आहे. ब्रहगुप्त (आद्य बीजगणित ग्रंथकार) याचा शके ५५० मध्ये लिहिलेला, ब्रहसिद्धान्तही प्रसिद्ध आहे. आज आपल्या देशात ज्योतिशास्त्र ज्या रुपात आहे त्याची सर्व अंगे ब्रह्मगुप्ताचे वेळी (इ. स. ६ शे सुमारास) पूर्ण झालेली दिसतात. लल्ल (शके ५६०), द्वितीय आर्यभट (शके ८७५) (याने अयनगतीचे गणित दिले), भटोत्पल (शके ८८८), श्रीपति (शके ९६१), राजमृगांक (शके ९६४) असे महत्त्वाचे ग्रंथकार भास्कराचार्यापर्यत होऊन गेले. भास्कराचार्य (जन्म शके १०३६ इ. स. ११२४) याचे सिद्धान्त शिरोमणी, करण कुतूहल, लीलावती ग्रंथ आहेत. भासकराचार्य हा बीडजवळ राहणारा. कोकणात नंदिग्रम (सध्या नांदगाव) तेथे राहणारा गणेश दैवज्ञ हा ख्यातनाम असलेला दुसरा महाराष्ट्रीय ग्रंथकार होय. (शके १५००). ग्रहलाघव हा याचा प्रसिद्ध ग्रंथ भारतभर पंचांग तयार करताना वापरला जातो. शके १५८० मध्ये कमलाकर या ग्रंथकाराने 'सिद्धात तत्व विवेक' हा ग्रंथ लिहिला. त्यात ध्रुव ताऱ्याचे चलन, काही गावांचे अक्षांश-रेखांश, मेघ, गारा, उल्कापात यांची कारणे, गणिताचे नवे प्रकार, इ. भाग आहे. जयसिंग या राजाने (इ.स. १६९३) जयपूर, दिल्ली, उज्जयिनी, काशी, मथुरा तेथे वेधशाळा (जंतर मंतर) उभारल्या. इंग्रज अमदानीत, नृसिंह उर्फ बापू देव, केरो लक्षण छत्रे, विसाजी रघुनाथ लेले, दप्तरी, चिंतामणी रघुनाथाचार्य, गोडबोले, इत्यादी ग्रंथकार झाले.

संहिता ग्रंथ -

ज्योतिषाच्या सर्व शाखांचे ज्यात विवेचन आहे त्यास प्रांरभी संहिता म्हणत. परंतु वराहमिहिरानंतर गणित व होरा खेरीज इतर ज्योतिषविषयक ग्रंथांना संहिता म्हणू लागले. वराहाच्या संहितेत तत्कालिन गरजेच्या अनेक विषयांचे विवेचन आले. त्यापैकी बरेच पुराणात समाविष्ट असतात.

संहितेतील मुहूर्त प्रकरणावर बरेच ग्रंथ झाले आहेत. व्यवहारातील अनेक प्रकारची कामे केव्हा करावी किंवा नव्याने सुरू करावी तसेच गर्भाधानादि संस्कारची केव्हा करावेत यासंबंधी वर्ज्यावर्ज्य विचार ज्यात केला जातो त्याला मुहूर्त अशी संज्ञा आहे. लल्लाचा रत्नकोष (शके ५६०), श्रीपतीचा रत्नमाला (शके ९६१), भोजकृत राजमार्तंड (शके ९६४), शारंङ्धराचा विवाहपटल (शके १४००), केशव दैवज्ञाचा मुहूर्ततत्त्व (शके १४२०), नारायणाचा मुहूर्तमार्तंड (शके १४०३), रामभटाचा मुहूर्त चिंतामणी (शके १४२२) मुहूर्त गणपती (शके १७४२) लेखक-गणपती हे ग्रंथ प्रसिद्ध आहेत.

होरा स्कंध-

वर सांगितलेल्या गणितादि ग्रंथांचा विकास किमान तीन हजार वर्षापासून जो होत आहे त्याची कारणे १) ग्रहाचारांपासून व्यक्तिमात्रांवर होणाऱ्या परिणामांचा विचार २) यज्ञार्थ किंवा इतर कार्याकरिता मुहूर्तांची आवश्यकता आणि ३) ग्रहचारांचे व्यक्तिमात्रावर होणारे परिणाम. युरोपात नौकानयन हे आणखी एक वाढीव कारण होते, असे प्रतीपादन करून दीक्षित लिहितात "ग्रहगति स्थितीचे चांगले ज्ञान होण्यापूर्वीच हल्लीची जातक पद्धति स्थापित झाली असली पाहिजे हे उघड आहे. ज्योतिषाचे प्राचीनत्व हे त्यामुळे अगदी ब्रह्मदेवापर्यंत मागे देण्यात येते."

ब्रह्माचार्यो वसिष्टोऽत्रिर्मुनु: पौलस्त्य लोमेशौ ।
मरीचिरंगिरो व्यासो नारद: शौनको भृगु: ॥
च्यवनो यवनो गर्ग: कश्यपश्चपराशर: ।
अष्टदशैते गंभीरा: ज्योतिष:शास्त्र प्रवर्तका: ॥

- नारद संहिता अ. १ श्लो. २-३

बृहत पाराशरी व लघुपाराशरी असे पारशरांचे दोन ग्रंथ आहेत. बृहत पाराशरीत बरेच मिश्रण झाले असून श्लोक ५ हजारवर असावेत. लघुपाराशरी (किंवा उडुदाय प्रदीप) हा ग्रंथ आजही प्रणाम मानला जातो. गर्गाच्या नावे होराशास्त्र हे पुस्तक प्रसिद्ध आहे. वसिष्ठ, भारद्वाज, शौनक, अत्रि या ऋषींची वचने इतर ग्रंथातून आढळतात. भृगुसूत्रे या नावाचे ग्रंथही कोठे कोठे मिळतात. भृगुसंहिता किंवा भृगुनाडी हे ग्रंथही फार प्रसिद्ध आहेत. भृगुंहितेत प्रत्येक व्यक्तीची पत्रिका मिळते असे सांगितले जाते. "भृगुसंहिता

ग्रंथ आहे यात संशय नाही, आणि त्यातील काही पत्रिका मी पाहिल्या आहेत. त्यावरुन त्यातली फले बरीच जमतात. नाडीग्रंथ अनेक आहेत. नाडी त्यातील सत्याचार्यांचा ध्रुवनाडी ग्रंथ चांगला आहे. त्यात दिलेले ग्रहांच स्पष्ट अंश आजच्या गणिताशी जुळणारे आहेत हे विशेष," असे भारतीय ज्योतिषशास्त्र या ग्रंथात श्री. शं. बा दीक्षित यांनी लिहिले आहे.

यवनजातक म्हणून एक प्राचीन ग्रंथ आहे. मीनराजजातक किंवा वृद्धयवनजातक असे नांव आहे. वराहमिहिराचे बृहज्जातक व लघुजातक कालिदासाचे उत्तरकालामृत, नृहरि याचा जातकसार, कल्याणवर्मा याचा सारावली (शके ८२१) श्रीपतीचा जातकपद्धती, नंदिग्रामस्थ केशवाची जातकपद्धती किंवा केशवी (शके १४९८), ढुंढीराजाचा जातकाभरण, गणेशकृत जातकालंकार, दामोदरसुत (शके १४६०), बलभद्राचा होरारत्न (शके १५७७), वैद्यनाथचा जातक पारिजात हे ग्रंथ सध्या ज्योतिषात प्रमाणभूत मानले जातात. जैमिनी सूत्र या नावाचा ग्रंथ दक्षिण भारतात प्रसिद्ध आहे. पूर्वमीमांसा या दर्शनाचा कर्ता व हा जैमिनी एकच असे मानले जाते.

प्रश्नशास्त्रावर वराहमिहिराचे दैवज्ञ वल्लभ, त्याचा मुलगा पृथुयशचे षट्पंचशिका, भटोत्पलाचे प्रश्नज्ञानम (शके ८८८) नीलकंठाचे प्रश्नतंत्र व ताजिक नीलकंठी, सिद्धनारायणदासचे प्रश्नवैष्णव ही पुस्तके प्रसिद्ध आहेत.

****

साभार – संदर्भ -

* भारतीय ज्योतिषशास्त्र - अर्थात भारतीय ज्योतिषशास्त्राचा प्राचीन आणि अर्वाचीन इतिहास - लेखक स्व. श्री शंकर बाळकृष्ण दीक्षित
* वैदिक कालविधान शास्त्र - श्री. श्री. भट
* ज्योतिष सोबती - ज्योतिष संशोधन मंडळ डोंबिवली प्रकाशित

पाश्चिमात्य ज्योतिष शस्त्राचा इतिहास

ख्रितापूर्वी सुमारे ३ हजार वर्षे मेसोपोटेमियामध्ये सुमेरियन लोक ज्योतिषाचा अभ्यास करु लागले. त्यांच्याकडून खाल्डियनांनी हा वारसा घेतला. उर, उरूक, बॅबिलोन व इतरत्र त्यांनी ग्रहवेध घेण्यासाठी उंच उंच मनोरे बांधले त्यांनी तयार केलेल्या कोष्टकांचा आधार ग्रिकांनी घेताला. अरबांमार्फत हे ज्ञान भारत, तीन, ग्रिस, इजिप्त, मेक्सिको इत्यादी देशात पसरले असा पाश्चात्यांचा अभिप्राय आहे. (मुळात अरब हा शब्द संस्कृत आहे. अरब म्हणजे अश्व. राशी चक्रासाठी वापरला जाणारा झोडाईक हा शब्दही संस्कृत अपभ्रंश आहे.)

टॉलेमी या ग्रीक ज्योतिषाने १ ल्या शतकात द आल्माजेस या ग्रंथात रवि, चंद्र व ग्रहांच्या गतीविषयक नियम दिले. टेट्राबिब्लास हा त्याचा दुसरा ग्रंथ. हिपार्कस या ख्रिस्तपूर्व पहिल्या शतकातील ज्योतिर्विदाचा तसेच बेरॉसोस या खाल्डियन ज्योतिर्विदाने लिहिलेला (ख्रि.पू.२८०) बबिलोनियाका हा ग्रंथ बहुधा त्याचा मार्गदर्शक ठरलेला असणार. ग्रीक तत्त्वज्ञ पायथॅगोरस , प्लॅटो, ॲरिस्टॉटल यांचा ग्रह परिणामांवर विश्वास असल्याने खाल्डियन ग्रहगणित स्विकारणे ग्रीकांना सोपे गेले. रोमनांनी ग्रीकांकडून हा वारसा घेताना ग्रहांची नावे आपल्या देवतांनुसार बदलली व तीच रोमन नावे सध्या पाश्चिमात्यात वापरली जातात.

ख्रिशचनांनी सुरुवातीला ज्योतिष हे दैववादी आहे असे मानून त्याविरुद्ध काही उपाय अधूनमधून केले. परंतु टॉलेमीच्या ग्रंथामुळे चौथ्या शतकानंतर पाश्चिमात्यात ज्योतिषाला शास्त्रीयतेचा दर्जा प्राप्त झाला. युरोपमधील अनेक राजे, संत, पुरुष, धार्मिक नेते, विचारवंत यांचा ज्योतिषावर विशवास होता व विद्यापीठात हा विषय होता. न्युटन गणिताकडे वळला कारण ज्योतीषावर त्यावा विश्वास होता. गेल्या तीन शतकात मात्र पाश्चात्य विद्यापीठातून आणि संशोधकांच्या वर्तुळातून ज्योतिषाची हाकलपट्टी* होऊन ज्योतिष हे अंधश्रद्धा मानले जाऊ लागते. परंतु याच बरोबर लोकांमध्ये ज्योतिषाचे आकर्षण खूपच वाढले असून ज्योतिर्विदांच्या संघटना ठिकठिकाणी निघाल्या आहेत. अनेक विचारवंत, विशेषत: डॉक्टर व मानस रोगतज्ञ, ज्योतिषाचा व हस्तसामुद्रिकाचा अभ्यास व प्रसार करु लागल्याने ज्योतिष हा पुन्हा पाश्चात्य विश्वविद्यालयातील अभ्यासविषय ठरेल अशी चिन्हे आहेत.

पाशचात्य व भारतीय ग्रंथांमध्ये फरक नाही. राशी, ग्रह, ग्रहयोग, भाव हा ढाचा ९० टक्के सारखा आहे. राशी चक्राच्या आरंभबिंदूबद्दल वैचारिक भेद आहे तो तांत्रिक स्वरुपाचा आहे. ज्योतिष विषयाचा अभ्यास अगदी प्राचीन कालापासून सर्व देशात पद्धतशीरपणे होत आहे. त्यावर सहस्त्रावधी ग्रंथ लिहिले गेले आहेत. इतर अनेक शास्त्रांपेक्षा ही ग्रंथसंख्या अधिक आहे. अनेक भारतीय विद्यापीठात ज्योतिषशास्त्र हा विषय या ना त्या स्वरुपात सध्याही आहे.

****

साभार - ज्योतिष सोबती - ज्योतिष संशोधन मंडळ डोंबिवली प्रकाशित

मूळ संदर्भ - भारतीय ज्योतिषशास्त्र - अर्थात भारतीय ज्योतिषशास्त्राचा प्राचीन आणि अर्वाचीन इतिहास - स्व. शंकर बाळकृष्ण दीक्षित

स्वप्न फल अध्याय

स्वप्न में हमारी कई अतृप्त इच्छाएँ भी चरितार्थ होती है। जैसे हमारे मन में कहीं भ्रमण करने की इच्छा होने पर स्वप्न में यह देखना कोई आश्चर्य की बात नाही है कि हम कहीं भ्रमण कर रहे हैं। सम्भव है कि जिस इच्छा ने हमें भ्रमण का स्वप्न दिखाया है वही कालान्तर में हमें भ्रमण कराये। इसलिए स्वप्न में भावी घटनाओं का आभास मिलना साधारण बात है। कुछ विद्वानों ने इस थ्योअरी का नाम सम्भाव्य गणित रख्खा है। इस सिद्धान्त के अनुसार स्वप्न में देखी गई कुछ अतृप्त इच्छाएँ सत्य रूप में चरितार्थ होती है; क्योंकि बहुत समय से कई इच्छाएँ अज्ञात होने के कारण स्वप्न में प्रकाशित रहती हैं और ये ही इच्छाएँ किसी कारण से मन में उदित होकर हमारे तदनुरुप कार्य करा सकती हैं। मानव अपनी इच्छाओं के बल से ही सांसारिक क्षेत्र में उन्नति या अवनति करता है, उसके इच्छाओं में कुछ इच्छाएँ अप्रस्फुटित अवस्था में ही विलीन हो जाती हैं, लेकिन कुछ इच्छाएँ परिपक्व अवस्था तक चलती रहती हैं। इन इच्छाओं में इतनी विशेषता होती है कि ये बिना तृप्त हूए मुक्त नहीं हो सकती। सम्भाव्य गणित के सिद्धान्ता नुसार जब स्वप्न में परिपक्व अवस्था वाली अतृप्त इच्छाएँ प्रतीकाधार को लिये हुए देखी जाती हैं, उस समय स्वप्न का भावी फल सत्य निकलता है। अबाधभावानुसंग से हमारे मन के अनेक गुप्त भाव प्रतीकों से प्रकट हो जाते हैं, मन की स्वाभाविक धारा स्वप्न में प्रवाहित होती है, जिससे स्वप्न में मन की अनेक चिन्ताएँ गुँथी हुई प्रतीत होती हैं। स्वप्न के साथ संश्लिष्ट मन की जिन चिन्ताओं और गुप्त भावों का प्रतीकों से आभास मिलता है, वही स्वप्न का अव्यक्त अंश भावीं फल के रुप में प्रकट होता है।

स्वप्न और उसके प्रकार -

स्वप्नशास्त्र में प्रधानतया निम्नलिखित सात प्रकार के स्वप्न बताये गये हैं:

दृष्ट- जो कुछ जागृत अवस्था में देखा हो उसी को स्वप्नावस्था में देखना।

श्रुत- सोने के पहले कभी किसी से सुना हो उसी को स्वप्नावस्था में देखना।

अनुभूत- जो जागृत अवस्था में किसी भाँति अनुभव किया हो, उसी को स्वप्न में देखना।

प्रार्थित- जिस की जागृतावस्था में प्रार्थना-इच्छा की हो उसी को स्वप्न में देखना।

कल्पित - जिसकी जागृतावस्था में कभी भी कल्पना की गयी हो उसी को स्वप्न में देखना।

भाविक- जो कभी न तो देखा गया हो और न सुना गया हो, पर जो भविष्य में घटित होने वाला हो उसे स्वप्न में देखना।

दोषज- वात, पित्त और कफ के विकृत हो जाने से जो स्वप्न देखा जाय, बिमारि के कारण देखे स्वप्न।

इन सात प्रकार के स्वप्नों में से पहले पाँच प्रकार के स्वप्न प्राय: निष्फल होते हैं, वस्तुत: भाविक स्वप्न का फल ही सत्य होता है।

रात्रि के प्रहर के अनुसार स्वप्न का फल –

रात्रि के पहले प्रहर में देखे गये स्वप्न एक वर्ष में,

दूसरे प्रहर में देखे गये स्वप्न आठ महोने में (चन्द्रसेने मुनि के सात से ७ महिने में),

तिसरे प्रहर में देखे गये स्वप्न तीन महीने में,

चौथे प्रहर में देखे गये स्वप्न एक महीने में (वराहमिहिर के मत से १६ दिन में),

ब्राह्म मुहूर्त (उष:काल) में देखे गये स्वप्न गये दस दिन में,

प्रात:काल सूर्योदय से कुछ पूर्व देखे गये फल अतिशिघ्र प्राप्त होता है।

तिथियों की अनुसार स्वप्न का फल-

शुक्लपक्ष कि प्रतिपदा - इस तिथी में स्वप्न देखने पर विलंब से फल मिलत है।

शुक्लपक्ष कि द्वितीया- इस तिथी में स्वप्न देखने पर विपरीत फल होता है। अपने लिए देखने से दुसरों को और दुसरों के लिए देखने से अपने को फल मिलता है।

शुक्लपक्ष की तृतीया - इस तिथि में भी स्वप्न देखने से विपरीत फल मिलता है। पर फल की प्राप्ति विलम्ब से होती है।

शुक्ल पक्ष की चतुर्थी और पंचमी - इन तिथियों में स्वप्न देखने से दो महिने से लेकर दो वर्ष तक के भीतर फल मिलता है।

शुक्लपक्ष की षष्ठी, सप्तमी अष्टमी, नवमी और दशमी- इन तिथियों में स्वप्न देखने से शीघ्र फल की प्राप्ति होती है तथा स्वप्न सत्य निकलता है।

शुक्लपक्ष की एकादशी और द्वादशी- इन तिथियों में स्वप्न देखने से विलम्ब से फल होता है।

शुक्लपक्ष की त्रयोदशी और चतुर्दशी - इन तिथियों में स्वप्न देखने से स्वप्न का फल नहीं मिलता है तथा स्वप्न मिथ्या होते हैं।

पूर्णिमा - इस तिथी के स्वप्न का फल अवश्य मिलता है।

कृष्णपक्ष कि प्रतिपदा - इस तित्जी के स्वप्न का फल नही होता है।

कृष्णपक्ष की द्वितीया- इस तिथि के स्वप्न का फल विलम्ब से मिलता है। मतान्तर से, इसका स्वप्न सार्थक होता है।

कृष्णपक्ष की तृतीया और चतुर्थी- इस तिथियों के स्वप्न मिथ्या होते हैं।

कृष्णपक्ष की पंचमी और षष्ठी - इन तिथियों के स्वप्न दो महीने बाद और तीन वर्ष भीतर फल देने वाले होते हैं।

कृष्णपक्ष की अष्टमी और नवमी - इन तिथियों के स्वप्न विपरीत फल देने वाले होते हैं।

कृष्णपक्ष की दशमी, एकादशी, द्वादशी और त्रयोदशी- इन तिथियों के स्वप्न विपरीत फल देने वाले होते हैं

कृष्णपक्ष की चतुर्दशी- इस तिथि का स्वप्न सत्य होता है तथा शीघ्र ही फल देता है।

अमावस्या- इस तिथि का स्वप्न मिथ्या होता है।

-संदर्भ - भद्रबाहु संहिता

शिवजयंती - तारीख कि तिथी ?

शिवजयंतीच्या तारखेविषयी अनेक वाद व गोंधळ घातले गेले आहेत, मागील शतकभर हा वाद सुरु होता अखेर महाराष्ट्र शासनाने एक समिती स्थापून १९ फेब्रुवारी १६३० ही इंग्रजी तारिख निश्चित केली. पण यात एक मुलभुत त्रुटि राहीली. ही तारीख ज्युलिअन कॅलेंडरप्रमाणे होती. आणि सध्या आपण जे कॅलेंडर वापरतो ते ग्रेगेरिअन कॅलेंडर आहे.
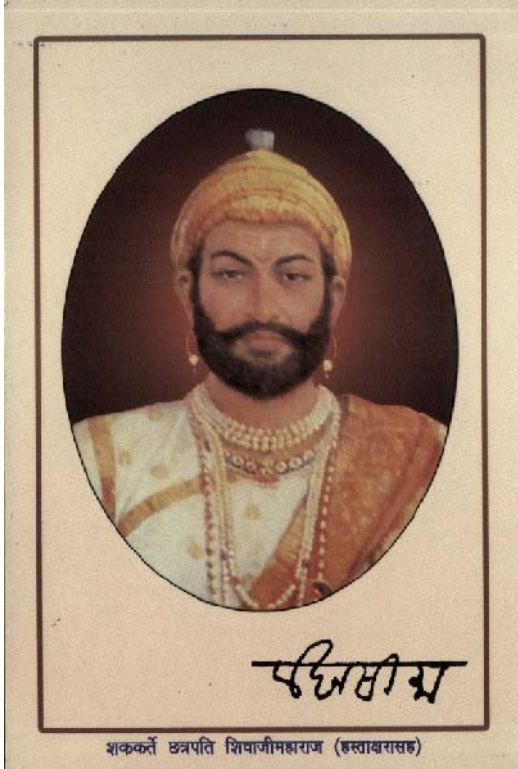
“शालिवहन शके १५५१ शुक्ल नाम संवत्सरी, उत्तरायणात, शिशिर ऋतूमध्ये फाल्गुन वद्य (कृष्ण) तृतियेला संध्याकाळी शुभ लग्न उदित” असता छत्रपती शिवाजी माहाराजांचा जन्म झाल्याचे “शिवभारत“च्या ६ व्या अध्यायात म्हटले आहे. याच जन्म विवरणची एक जन्म पत्रिकाही उपलब्ध आहे. जन्म वेळ ३० घटी (संध्या. ७.००) आहेत.

जोधपूर येथे उपलब्ध झालेली महाराजांची जन्मकुंडली.

भूबाणप्राणचन्द्राद्वैः सम्मिते शालिवाहने ।
शके संवत्सरे शुक्ले प्रवृत्तेचोत्तरायणे ॥ २६ ॥
शिशिरर्तौ वर्तमाने प्रशस्ते मासि फाल्गुने ।
कृष्णपक्षे तृतीयायां निशि लग्ने सुशोभने ॥ २७ ॥
अनुकूलतरैस्तुंगसंश्रयैः पञ्चभिर्ग्रहैः ।
व्यंजिताशेषजगतीस्थिरसाम्राज्यवैभवम् ॥ २८ ॥
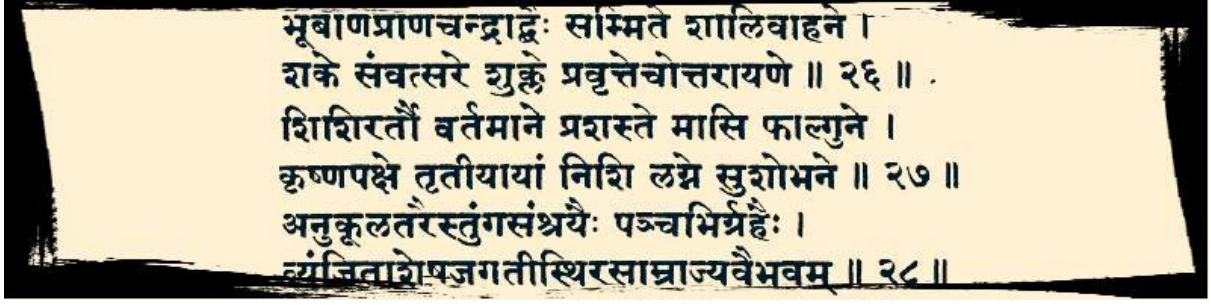
त्यानुसार सिंह लग्न व कन्या रास येते व चंद्राधियोग हा राजयोग झाला आहे. तृतियात (पराक्रम स्थान) उच्च शनि, पंचमात केतू, सप्तमात रवि-गुरु, अष्टमात बुध, नवमात शुक्र व लाभात मंगळ-राहु आहेत. आता हि सर्व ग्रहस्थिती १९ फेब्रुवारी १६३० या तारखेशी मेळ खात नाही. फाल्गुन वद्य तृतिया हि तिथी तर निश्चित आहे, पण भारतीय पंचांगानुसार १९ फेब्रुवारीला फाल्गुन वद्य तृतिया येऊ शकत नाही. मग या फरकाचे कारण काय? तर याचे कारण म्हणजे ज्युलियन व ग्रेगेरिअन कालगणनेतील फरक. १९ फेब्रुवारी ही ज्युलिअन कालगणनेनुसारची तारीख आहे जी कालगणना आता वापरात नाही, सध्या जगभरात ग्रेगेरिअन कालगणना वापरली जाते त्यानुसार फाल्गुन वद्य तृतिया शके १५५१ यादिवशी १ मार्च १६३० हा दिवस येतो. ज्युलियन कालगणना व ग्रेगेरिअन कालगणना यांच्यात इ.स. १७०० पर्यंत १० दिवस अधिक केले गेले तर इ.स. १७०० नंतर ११ दिवस अधिक केले गेले, हा फरक ब्रिटीशांनी इ.स. १७५२ पासून अंमलात आणण्यास सुरवात केली व भारतातही तेंव्हापासूनच लागू झाला. म्हणून शिवाजी महाराजांची जन्म तारीख ग्रेगेरिअन कालगणनेनुसार (आताच्या चालू कालगणनेनुसार) १ मार्च येईल, १९ फेब्रुवारी नव्हे.

महापुरुषांचे जन्मोत्सव तिथि प्रमाणे साजरे करावे की तारखे प्रमाणे हा अनेक वर्षापासूनचा वाद आहे. आता तारखेतही असे घोळ असतील व तिथि निश्चित असेल तर तिथिप्रमाणेच साजरे करण्यास काय हरकत आहे?. तसेही कॅलेंडर भारतात प्रचलित होण्यापुर्वीच्या घटना तिथि प्रमाणेच साजऱ्या करणे हेच योग्य वाटते. आता श्रेय लाटण्यासारखे तुच्छ राजकारण बाजूला ठेवल्यास बरे होईल.

हे सर्व लिहिण्याचे कारण जुन्या कडिला ऊत आणण्याचे नसून ज्या शिवरायानी स्वराज्य स्थापन केले, जे शिवराज आज साडेतिनशे वर्षानंतरही आम्हास प्रेरणा देतात त्या शिवराजांची अचूक जन्म तारीख जाणून घेणे इतकेच आहे.

एका ज्योतिषीय सोफ़्ट्वेअर मध्ये पत्रिका बनविली आहे ती शिवभारत मध्ये दिलेल्या पत्रिकेशी तंतोतन्त जुळते आहे. जन्म तारीख ०१ मार्च १६३०, जन्मवेळ- संध्याकाळी ७.०० वाजता (३० घटी), जन्म स्थळ शिवनेरी पुणे. (अक्षांश -१९अं २१ मि. उत्तर, रेखांश – ७३ अं ५३ मि. पूर्व) येथे रामण अयनांश वापरले आहेत.

September 1752

Su	M	Tu	W	Th	F	Sa
-	-	1	2	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

या विषयी काही मंडळींचे असे मत आहे की भारतीय कालगणना केवळ भारतातच प्रचलीत आहे व इंग्रजी कॅलेंडर जगभर म्हणून शिवाजी महाराजांना “ग्लोबलाइज” करण्यासाठी इंग्रजी तारखेप्रमाणेच साजरी करावी. मग उद्या आखाती देशात शिवाजी महाराज पोहचावे म्हणून “हिजरी” सनाप्रमाणे शिवजयंती साजरी करणार का?

आता इतके स्पष्ट करूनही बरेच लोक तारखेचाच अट्टाहास धरतील व इतरांनीही तारखे प्रमाणेच शिवजयंती साजरी करावी असे म्हणतील, त्यांना मी इतकेच म्हणेन कि, ज्या लोकांनां शिवाजी महाराज हे देवतुल्य वाटतात त्यांनी तिथीप्रमाणे शिवजयंती साजरी करावी व ज्यांना ते सामान्य मनुष्य वाटतात त्यांनी तारखेप्रमाणे शिवजयंती साजरी करावी बस्स. कारण देवादिकांच्या सर्वच जयंत्या तसेच आपले सण आपण तिथीप्रमाणेच साजरे करतो ना .

अर्थात हे माझे मत आहे.

श्री उत्तम रमेश गावडे

ज्योतिष विशारद, वास्तु विशारद

9901287974

वास्तु आणि पंचतत्वे

- श्री उत्तम रमेश गावडे

ही सृष्टी, या सृष्टीतील प्रत्येक वस्तु ही पंचतत्वांपासून बनलेली आहे. आपले शरीर सुध्दा याच पंचतत्वांपासून बनले आहे. हाच सिध्दांत आपल्या वास्तुलाही लागू होतो. पंचतत्वे म्हणजे अग्नि, पृथ्वी, वायु, जल व आकाश यांनाच पंचमहाभूते असेही म्हणतात. *या पंचतत्वांचे प्रमाणबध्द संतुलन म्हणजेच 'वास्तुशास्त्र'.*

मूळात आयुर्वेद, योग व वास्तुशास्त्र यांचा मूळ उद्देश अनुक्रमे शरीर, मन व वास्तु (राहण्याची जागा) यांना संतुलीत करणे हाच आहे. पंचतत्वांचे हे संतुलनच वास्तुत राहणाऱ्यांना प्रसन्नता, शांती, आरोग्य, धन, समृध्दी व योग्य निर्णय घेण्याची क्षमता प्रधान करते व याच पंचतत्वांचे असंतुलन वास्तुतील शक्तीना अतिप्रभावी किंवा निष्प्रभावी करुन वास्तुत राहणाऱ्या लोकांसाठी प्रतिकुल परिस्थिती निर्माण करते.
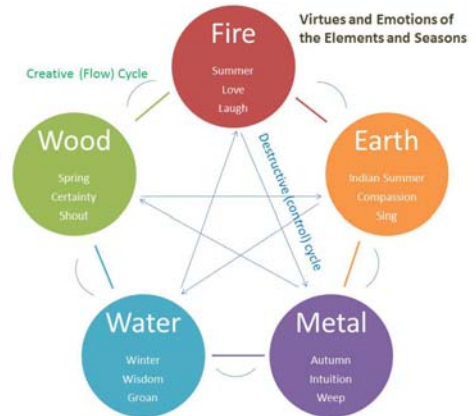
ज्यावेळी आपण म्हणतो की, घर वास्तुशास्त्रानुसार आहे म्हणजेच त्या घरात पंचतत्वांचे संतुलन असते व जेंव्हा आपण म्हणतो की, घरात वास्तुदोष आहे तेंव्हा त्याघरात पंचतत्वांचे संतुलन बिघडलेले असते. या पंचत्वांचे एकमेकांशी असलेले संबंध महत्वाचे आहेत. कोणत्या तत्वातून कोणत्या तत्वची निर्मिती (उत्त्पत्ती) होते व कोणते तत्व कोणत्या तत्वाला नियंत्रीत (नाश) करते हे ज्याला समजले त्यालाच वास्तुशास्त्र समजले असे म्हणू शकतो.

पंचतत्वांच्या असंतुलनाचे परिणाम -

१) अग्नी तत्व - वास्तुमध्ये अग्नी तत्व असंतुलीत झाले असेल तर विनाकारण प्रत्येक कार्यात अपयश येते, स्वताची ओळख निर्माण करण्यात अडचणी येतात, अशा वास्तुत राहणाऱ्या लोकांत असुरक्षितेची भावना असते. अग्नी तत्वाचे असंतुलन हे आत्मविश्वास, जोश, उत्साह यांची कमी निर्माण करते.

२) पृथ्वी तत्व - वास्तुमध्ये पृथ्वी तत्व असंतुलीत झाले असेल तर जीवनात स्थिरता येणे कठीण होते, प्रत्येक बाबतीत या व्यक्तींना अस्थिरतेचा सामना करावा लागतो. अशा वास्तुतील व्यक्ती आळशी व स्फुर्तीहीन जीवन जगताना दिसतात. जीवनाचे ध्येय ठरविता येत नाही.

३) वायु तत्व - वास्तुमध्ये वायु तत्व असंतुलीत झाले असेल तर अशा वास्तुतील लोक अधिक रागिष्ट, छोट्या छोट्या गोष्टींवर रागावणाऱ्या असतात, घरातील सदस्यांमध्ये नेहमी नोकझोक चालू असते. नातेवाईक व शेजाऱ्यांशी संबंध चांगले नसतात. अगदी शुल्लक गोष्टींवर सुद्धा टोकाची प्रतिक्रिया देतात. समाजापासून दूर असतात.

४) जल तत्व - वास्तुमध्ये जल तत्व असंतुलीत झाले असेल तर अशा व्यक्तींच्या जीवनात नविन संधी येत नाहीत. धनाची सतत कमतरता जाणवते. प्रगति थांबते. नोकरी व्यवसायात प्रचंड मेहनत करुनही फारशी प्रगती होत नाही. घरच्या सदस्यांमध्ये एकवाक्यता नसते, एकमत कधीच होत नाही. अशा वास्तूतील लोक नेहमी एका दडपणाखाली वावरताना दिसतात.

५) आकाश तत्व - वास्तुमध्ये आकाश तत्व असंतुलीत झाले असेल तर व्यक्तींचे मन भ्रमित व अस्थिर असते, नेहमी वैचारीक गोंधळ माजलेला असतो, विचारांची दिशा पक्की नसते. सकारात्मक विचार मनात येत नाहीत. त्यामुळे अनेक अडचणी व बंधनाची सतत जाणीव होत असते.

प्रतिक, आकार आणि रंग यांच्या माध्यमातून असंतुलित पंचतत्वांना बऱ्याच प्रमाणात संतुलित करता येते.

*****

श्री उत्तम रमेश गावडे
ज्योतिष विशारद, वास्तु विशारद
9901287974

By – Vrushali N.

Do miracles happen?
If Yes……. how?
If No……. why?
First of all let's make clear what exactly miracle means. We continuously think of something or expect something in life. When we find that we suddenly get what we think of is what we say miracle.

Since few years we attend the Saptah (7 days) of Hari Mandir of Parampujya Kalawati Mata at Belgaum.

Every year I find that I am benefited in one or the other way. So I can say, miracles happen.

This year, I was wondering how it happens?
Every year we eagerly wait for these 7 days. One week we spend only in the thought of Hari Mandir.

Continuously for 7 days we read the Book Shri Krishna Pratap, along with singing bhajans and maximum chanting of mantra OM NAMAH SHIVAY. There is no place for any other thought for all these 7 days. This finally leads to miracles.

But still the question remains unanswered …how?

Now a days I find many of the groups come forward with whatsapp online workshops promising you …. change your life….shift your energy to higher vibrations….bright healthy wealthy life awaits you…..and so on.

What exactly they offer you in these workshops?

Our mind is made to chant few affirmations. Our mind is focussed on that particular point. Our energy vibrates to higher level and when we achieve what we expect we say… miracles happen.

Our Hindu vedic culture too works on the same principals. Instead our Stotras, mantras, prayers are loaded with tons and tons of energy. And this is already there to serve us since 1000's of years.

The only requirement is awareness and belief.

Just a chanting of 7 days can make miracles to happen. Why can't we make it a part of our daily life.

There's a mantra chanting for each and every aspect of life. Education, relationship, career, prosperity, health, etc.

So, from today let's make chanting as a compulsory part of our daily routine.

We request you to share your experience on our page.

ஐ SHUBHAM BHAVATU ௸

Vrushali N.
Tarot Reader, Reike Master
9663454836
vrushalivs@gmail.com

कुटुम्बभक्तवसनाद् देयं यदतिरिच्यते ।
अन्यथा दीयते यद्धि न तद् दानं फलप्रदम् ॥
- कुर्मपुराण
कुटुंबके भरण-पोषणसे अधिक अवशिष्ट पदार्थ का दान करना चाहिये। नही तो दिया जाने वाला दान फलप्रद नही होता।

स्वस्तिक हिन्दू धर्म का पवित्र, पूजनीय चिह्न और प्राचीन धर्म प्रतीक है। यह देवताओं की शक्ति और मनुष्य की मंगलमय कामनाओं का संयुक्त सामर्थ्य का प्रतीक है। इसे हमारे सभी व्रत, पर्व, त्यौहार, पूजा एवं हर मांगलिक अवसर पर कुंकुम से अंकित किया जाता है। यह मांगलिक चिन्ह अनादि काल से सम्पूर्ण सृष्टि में व्याप्त रहा है। अत्यन्त प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति में स्वस्तिक को मंगल-प्रतीक माना जाता रहा है।

स्वस्तिक का अर्थ -

भारतीय संस्कृति में वैदिक काल से ही स्वस्तिक को विशेष महत्त्व प्रदान किया गया है। यूँ तो बहुत से लोग इसे हिन्दू धर्मका एक प्रतीक चिह्न ही मानते हैं किन्तु वे लोग ये नहीं जानते कि इसके पीछे कितना गहरा अर्थ छिपा हुआ है। सामान्यतय: स्वस्तिक शब्द को "सु" एवं "अस्ति" का मिश्रण योग माना जाता है। यहाँ "सु" का अर्थ है- शुभ और "अस्ति" का- होना। संस्कृत व्याकरण अनुसार "सु" एवं "अस्ति" को जब संयुक्त किया जाता है तो जो नया शब्द बनता है- वो है "स्वस्ति" अर्थात "शुभ हो", "कल्याण हो"। स्वस्तिक शब्द **सु+अस+क** से बना है। 'सु' का अर्थ अच्छा, 'अस' का अर्थ सत्ता 'या' अस्तित्व और 'क' का अर्थ है कर्ता या करने वाला।

स्वस्तिक की प्राचीनता -

स्वास्तिक का प्रयोग अनेक धर्म में किया जाता है। जैन व बौद्ध सम्प्रदाय व अन्य धर्मों में प्राय: लाल, पीले एवं श्वेत रंग से अंकित स्वास्तिक का प्रयोग होता रहा है। सिन्धू घाटी सभ्यता की खुदाई में ऐसे चिन्ह व अवशेष प्राप्त हुए हैं जिनसे यह प्रमाणित हो जाता है कि लगभग 2-3 हजार वर्ष पूर्व में भी मानव सम्भ्यता अपने भवनों में इस मंगलकारी चिन्ह का प्रयोग करती थी। द्वितीय विश्व युद्ध के समय एडोल्फी हिटलर ने उल्टे स्वास्तिक का चिन्ह अपनी सेना के प्रतीक रूप में शामिल किया था। सभी सैनिकों की वर्दी एवं टोपी पर यह उल्टा स्वास्तिक चिन्ह अंकित था। उल्टा स्वास्तिक ही उसकी बर्बादी का कारण बना। उसके शासन का नाश हुआ एवं भारी तबाही के साथ युद्ध में उसकी हार हुई। वहीं उल्टा (वामावर्त) स्वस्तिक को अमांगलिक, हानिकारक माना गया है।

स्वस्तिक की आकृति -

स्वस्तिक की आकृति हमारे ऋषि-मुनियों ने हज़ारों वर्ष पूर्व निर्मित की है। भारत में स्वस्तिक का रूपांकन छह रेखाओं के प्रयोग से होता है। स्वस्तिक में एक दूसरे को काटती हुई दो सीधी रेखाएँ होती हैं, जो आगे चलकर मुड़ जाती हैं। इसके बाद भी ये रेखाएँ अपने सिरों पर थोड़ी और आगे की तरफ मुड़ी होती हैं। रेखा खींचने का कार्य ऊपरी भुजा से प्रारम्भ करना चाहिए। इसमें दक्षिणवर्त्ती गति होती है। मानक दर्शन अनुसार स्वस्तिक की यह आकृति दो प्रकार की हो सकती है। प्रथम स्वस्तिक, जिसमें रेखाएँ आगे की ओर इंगित करती हुई हमारे दायीं ओर मुड़ती (दक्षिणोन्मुख) हैं। इसे **दक्षिणावर्त स्वस्तिक** कहते हैं। दूसरी आकृति में रेखाएँ पीछे की ओर संकेत करती हुई हमारे बायीं ओर (वामोन्मुख) मुडती हैं। इसे **वामावर्त स्वस्तिक** (उसके विपरीत) कहते हैं। दोनों दिशाओं के संकेत स्वरूप दो प्रकार के स्वस्तिक स्त्री एवं

पुरुष के प्रतीक के रूप में भी मान्य हैं। किन्तु जहाँ दाईं ओर मुडी भुजा वाला स्वस्तिक शुभ एवं सौभाग्यवर्द्धक हैं।

स्वस्तिक का उपयोग –

स्वास्तिक बनाने के लिए धन चिन्ह बनाकर उसकी चारों भुजाओं के कोने से समकोण बनाने वाली एक रेखा दाहिनी ओर खींचने से स्वास्तिक बन जाता है। रेखा खींचने का कार्य ऊपरी भुजा से प्रारम्भ करना चाहिए। इसमें दक्षिणवर्त्ती गति होती है। सदैव कुंकुम, सिन्दूर व अष्टगंध से ही अंकित करना चाहिए। ॐ एवं स्वास्तिक का सामूहिक प्रयोग नकारात्मक ऊर्जा को शीघ्रता से दूर करता है। भवन, कार्यालय, दूकान या फैक्ट्री या कार्य स्थल के मुख्य द्वार के दोनों ओर स्वास्तिक अंकित करने से सकारात्मक ऊर्जा बढ़ती है। पूजा स्थल, तिजोरी, कैश बॉक्स, अलमारी में भी स्वास्तिक स्थापित करना चाहिए। स्वास्तिक को धन-देवी लक्ष्मी का प्रतीक माना जाता है। इसकी चारों दिशाओं के अधिपति देवताओं, अग्नि, इन्द्र, वरूण एवं सोम की पहूजा हेतु एवं सप्तऋषियों के आशीर्वाद को प्राप्त करने में प्रयोग किया जाता है। इसके अपमान व गलत प्रयोग से बचना चाहिए। स्वास्तिक के प्रयोग से धनवृद्धि, गृहशान्ति, रोग निवारण, वास्तुदोष निवारण, भौतिक कामनाओं की पूर्ति, तनाव, अनिद्रा व चिन्ता से मुक्ति भी दिलाता है। जातक की कुण्डली बनाते समय या कोई शुभ कार्य करते समय सर्वप्रथम स्वास्तिक को ही अंकित किया जाता है। ज्योतिष में इस मांगलिक चिन्ह को प्रतिष्ठा, मान-सम्मान, सफलता व उन्नति का प्रतीक माना गया है। मुख्य द्वार पर 6.5 इंच का स्वास्तिक बनाकर लगाने से से अनेक प्रकार के वास्तु दोष दूर हो जाते हैं। हल्दी से अंकित स्वास्तिक शत्राु शमन करता है। स्वास्तिक 27नक्षत्रों का सन्तुलित करके सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करता है। यह चिन्ह नकारात्मक ऊर्जा का सकारात्मक ऊर्जा में परिवर्तित करता है। इसका भरपूर प्रयोग अमंगल व बाधाओं से मुक्ति दिलाता है।

स्वास्तिक का प्रयोग -

स्वास्तिक का प्रयोग शुद्ध, पवित्र एवं सही ढंग से उचित स्थान पर करना चाहिए। शौचालय एवं गन्दे स्थानों पर इसका प्रयोग वर्जित है। ऐसा करने वाले की बुद्धि एवं विवेक समाप्त हो जाता है। दरिद्रता, तनाव एवं रोग एवं क्लेश में वृद्धि होती है। स्वास्तिक की आकृति श्रीगणेश की प्रतीक है और विष्णु जी एवं सूर्यदेव का आसन मानी जाती है। इसे भारतीय संस्कृति में विशेष स्थान प्राप्त है। प्रत्येक मंगल व शुभ कार्य में इसे शामिल किया जाता है। इसका प्रयोग रसोईघर, तिजोरी, स्टोर, प्रवेशद्वार, मकान, दुकान, पूजास्थल एवं कार्यालय में किया जाता है। यह तनाव, रोग, क्लेश, निर्धनता एवं शत्रुता से मुक्ति दिलाता है।

स्वस्तिक की आकृति सदैव कुमकुम (कुंकुम), सिन्दूर व अष्टगंध से ही अंकित करनी चाहिए। यदि आधुनिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो अब तो विज्ञान भी स्वस्तिक, इत्यादि माँगलिक चिह्नों की महता स्वीकार करने लगा है। आधुनिक विज्ञान ने वातावरण तथा किसी भी जीवित वस्तु, पदार्थ इत्यादि के ऊर्जा को मापने के लिए विभिन्न उपकरणों का आविष्कार किया है और इस ऊर्जा मापने की इकाई को नाम दिया है- **बोविस**। इस यंत्र का आविष्कार जर्मनी और फ़्राँस ने किया है। मृत मानव शरीर का बोविस शून्य माना गया है और मानव में औसत ऊर्जा क्षेत्र 6,500 बोविस पाया गया है। वैज्ञानिक हार्टमेण्ट अनसर्ट ने आवेएंटिना नामक यन्त्र द्वारा 'विधिवत पूर्ण लाल कुंकुम से अंकित स्वस्तिक की सकारात्मक ऊर्जा को 100000 बोविस यूनिट' में नापा है। यदि इसे उल्टा बना दिया जाए तो यह प्रतिकूल (नकारात्मक) ऊर्जा को इसी अनुपात में बढ़ाता है।

स्वस्ति मंत्र - ॐ स्वस्ति न इंद्रो वृद्ध-श्रवा-हः स्वस्ति न-ह पूषा विश्व-वेदा-हः। स्वस्ति न-ह ताक्षर्यो अरिष्ट-नेमि-हि स्वस्ति नो बृहस्पति-हि-दधातु ॥

- ज्योतिष जगत द्वारा संकलित

प्राचीन भारतीय शिल्पशास्त्र – शिल्पसंहिता

शिल्प म्हणजे मुर्ती आणि शिल्पशास्त्र म्हणजे मुर्ती इ. घडविण्याची कला अगर शास्त्र असाच बहुतेकांचा समज असतो. पण शिल्पशास्त्र अगर शिल्पसंहिता या शब्दाचा इतका मर्यादीत अर्थ नाही आहे. शिल्प शब्दाचा अर्थ यापेक्षा अधिक व्यापक आहे.

शिल्प याचा अर्थ –

“यत् शीलयति समा धाति तत्शिल्पें”

‘जे मनाला समाधान देते ते अथवा जे दुःख निवारण करते ते शिल्प’ असा आहे.

कश्यपसंहिता ही सर्वप्रथम संहिता मानण्यात येते. त्यानंतर १८ संहिताकारानी संहिता लिहिल्याचा उल्लेख अढळतो. पण यातल्या बहुतेक आता उपलब्ध नाहीत. सद्या केवळ कश्यपसंहिता, भृगुसंहिता व मयसंहिता या तीनच संहिता उपलब्ध असल्याचे अढळते. *(ज्योतिषशास्त्रांतर्गत येणाऱ्या संहिता व शिल्पशास्त्रांतर्गत येणाऱ्या संहिता वेगवेगळ्या आहेत.)

आपल्या प्राचिन ऋषीमुनींनी ज्ञानासंबंधीची जी रितसर मांडणी केली आहे तीचा जरा विचार करू.

अगदी पहीले ज्ञान म्हणजे प्रत्यक्ष अनुभव, असे अनुभव आले म्हणजे त्यांचे हितकर-अहितकर असे भेद पाहून जो त्यांचा आढावा घेतात त्याला “कला” (Art Or Skill) म्हणतात. अशा अनेक कला एकत्रित करून त्यांचे नियम ठरविले तर ती “विद्या” होते. अनेक विद्यांचे संकलित स्वरूप म्हणजे “शास्त्र” व अनेक शास्त्रे एकत्र सूचित झाली म्हणजे त्यास “संहिता” म्हणतात.

याप्रमाणे शिल्पात संहिता, शास्त्रे, विद्या व कला याचा कसकसा अंतर्भाव होतो तो पाहू.

शिल्पसंहितेच्या अंतर्गत तीन(३) खंड, दहा (१०) शास्त्रे, बत्तीस (३२) विद्या व चौसष्ट (६४) कला यांचा अंतर्भाव होतो यावरून शिल्पशास्त्राच्या व्यापकतेचा अंदाज येऊ शकतो.

शिल्पसंहितेच्या अंतर्गत तीन खंड येतात ते असे –

धातूनां साधनानां च वास्तूनां शिल्प संज्ञितं ॥
- भृगुसंहिता अ.१

१) धातूखंड २) साधनखंड ३) वास्तुखंड

सृष्टीत कोणती वस्तू कोठे व कशी निर्माण झाली आहे, त्याची उत्पत्ती कशी झाली व ती कशी मिळवावी हे सांगणारे ते धातूखंड. इंग्रजीत याला Exploration (शोध) म्हणू शकतो. सृष्टीत निर्माण झालेली वस्तू मिळविल्यावर ती आपणास हव्या त्या ठिकाणी कशी घेऊन जावी यासंबंधीची व्यवस्था म्हणजे साधनखंड. इंग्रजीत याला

Conveyance (वाहन) म्हणू शकतो. प्राप्त वस्तू वापरण्या योग्य बनविणे अगर त्यात निवास करता येण्याजोगी बनविणे म्हणजे वास्तुखंड. इंग्रजीत याला Habitation (निवास) म्हणू शकतो.

कृषीजलं खनिश्चेति धातुखंड त्रिधामतं ॥

- भृगुसंहिता अ.१

धातूखंडात तीन शास्त्रे येतात. 1) कृषि 2) जल 3) खनिज

नौका-रथाग्नि-यानानां कृति: साधन मुच्यते ॥

-भृगुसंहिता अ.१

साधनखंडात तीन शास्त्रे येतात. 4) नौका 5) रथ 6) विमान

वेश्म प्राकार नगररचना वास्तु संज्ञितं ॥

- भृगुसंहिता अ.१

वास्तुखंडात चार शास्त्रे येतात. 7) वेश्म ब) प्राकार 8) नगररचना 9) यंत्र

यावरुन आपण शिल्पसंहिता (शिल्पशास्त्र) हे इंग्रजीतील Engineering या शब्दापेक्षा जास्त व्यापक आहे असे म्हणू शकतो.
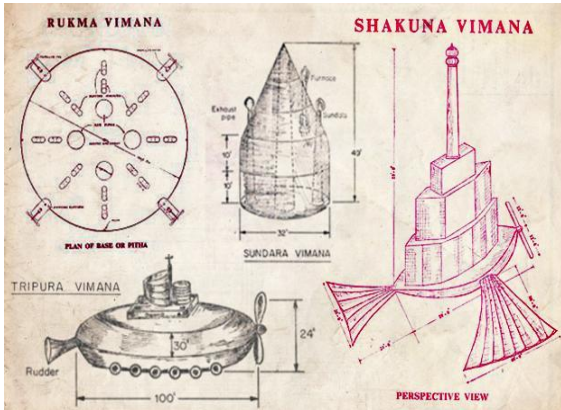
ज्याला आज आपण वास्तुशास्त्र म्हणतो ते या शिल्पामधील वास्तुखंडामधील चार शास्त्रामधील एक शास्त्र (भाग) आहे. तर असे हे वास्तुशास्त्र जर शिल्पसंहितेचा केवळ एक छोटासा भाग असेल तर मग शिल्पसंहितेची व्याप्ती किती असेल याचा विचार करा.

आता पाहू दहा शास्त्रे -

१) धातूखंडात तीन शास्त्रे येतात.
अ) कृषि ब) जल क) खनिज

२) साधनखंडात तीन शास्त्रे येतात.
अ) नौका ब) रथ क) विमान

३) वास्तुखंडात चार शास्त्रे येतात.
अ) वेश्म ब) प्राकार क) नगररचना ड) यंत्र

शिल्पसंहितेत एकंदर दहा शास्त्रांचा अंतर्भाव होतो. ती दहा शास्त्रे व त्यांतील विषय पुढे दिल्या प्रमाने आहेत.

१) कृषिशास्त्र - कृषी म्हणजे शेती असे हल्ली मानण्यात येते, पण शिल्पामध्ये कृषी हा शब्द अधिक व्यापक अर्थाने वापराला आहे. वृक्ष(झाडे), पशू (जनावरे) व मनुष्य यांची शरीररचना व गुणधर्म कोणते, त्यास योग्य वळण कसे लावावे व त्याचा उपयोग कसा व कोठे करावा हे याशास्त्रात सांगितले आहे. म्हणजेच वृक्ष, पशू व मनुष्य या तिघांचे प्रसव व पालन ही कामे कशी करावी, हे विषय कृषी शास्त्रात येतात. आजच्या भाषेत कृषीलाच आपण जीवशास्त्र म्हणू शकतो.

२) जलशास्त्र - संसेचन म्हणजे पाणीपुरवठा, पाणी कसे मिळवावे, हव्या असलेल्या ठिकाणि कसे न्यावे, संहरण म्हणजे अधिक झालेले पाणी काढून टाकणे व स्तंभन म्हणजे पाणी अडवून धरणे या गोष्टी जलशास्त्रांतर्गत येतात.

३) खनिजशास्त्र - खाणीतून मातीपासून, दगड, धातू इ. पदार्थ असे काढावेत, काढलेले पदार्थ शुद्ध कसे करावेत, त्यांचे गुणधर्म कोणते, हवे असलेले गुण अथवा शुद्ध पदार्थ प्राप्तीसाठी अनेक पदार्थ कसे एकत्र करावेत तसे मिसळलेल्या पदार्थांमधून घटक द्रव्ये पुन्हा वेगळी अशी करावीत हे सर्व खनिजशास्त्रांतर्गत येते.

४) नौकाशास्त्र - पाण्याचे गुणधर्म कोणते, त्यावर कसे तरावे व तरण्यासाठी तरफे, नावा व जहाजे कशी तयार करावीत, पाण्यावरून नौका अथवा जहाजाने माल वाहणे इ गोष्टी या शास्त्रांतर्गत येते.

५) रथशास्त्र - जमिनीवरून माल इकडुन तिकडे कसा न्यावा, त्यासाठी रस्ते, पुल, घाट, बोगदे कसे बांधावेत, रथ, गाड्या वगैरे कशा तयार कराव्यात हे या शास्त्रांतर्गत येते.

६) विमान शास्त्र - किल्याला वेढा पडून सभोवार आग लावली तर त्या आगीवरून कसे उडत जावे, विमान कसे बनवावे व कसे चालवावे, वैमानिक कसा असावा, त्याला कोणकोणत्या गोष्टींचे ज्ञान असावे या गोष्टी या शास्त्रांतर्गत येते.

७) वेश्मशास्त्र (वास्तुशास्त्र) - वेश्म म्हणजे घर. मनुष्याचे ऊन, वारा, पाऊस वगैरे पासून रक्षण व्हावे म्हणून पानांपासून ते राजमहल किंवा दगडात कोरून केलेल्या लेण्यांपर्यंत निवाऱ्याच्या जागा कशा निर्माण कराव्यात हे वेश्म या शास्त्रांतर्गत येते.

८) प्राकार शास्त्र - हिंस्र पशू, रानटी लोक, शत्रू वगैरेंच्या त्रासापासून आपले संरक्षण असे करावे व त्या त्रास देणाऱ्यांचा नाश कसा करावा हे या शास्त्रात सांगितले आहे. दुर्ग, किल्ले इ. गोष्टींचा समावेश सुद्धा या शास्त्रांतर्गत होतो.

९) नगररचना शास्त्र - गावे, शहरे, बंदरे, राजधान्या कशा वसवाव्यात, त्यात कोणकोणत्या सोई असाव्यात व त्यांची व्यवस्था कशी ठेवावी हे या शस्त्रांतर्गत येते. नगरात आठ बाबींचा विचार केलेला असतो. प्रपा म्हणजे पिण्याच्या पाण्याचा पुरवठा, मंडप किंवा धर्मशाला, आपण म्हणजेच बाजारपेठ, राजगृह - सरकारी कार्यालये, लोकवस्ती, देवालय, नगर सुरक्षा व आराम म्हणजेच बागा अथवा वाटीका म्हणजेच करमणुकीची साधने.

** [एक कुटुंब राहण्याच्या घरास वेश्म म्हणतात, युद्धाच्या वेळी उपयोगी पडणारे ते प्राकार व पुष्कळ घरे एकत्र असतात ते नगर. सध्या या तिन्हीना मिळून वास्तुशास्त्र मानण्यात येते.]*

१०) यंत्रशास्त्र - माणसे किंवा जनावरे यांची शक्ती लावून मोठमोठी अवजड कामे कशी करून घ्यावीत, पाणी वारा वगैरे सृष्टीतील शक्तिंची मदत या कामी कशी घ्यावी हे या शास्त्रांतर्गत येते.

याप्रमाणे शिल्पसंहितेत एकंदर दहा शास्त्रांचा समावेश होतो. आपली संस्कृती खूप प्राचिन व पुर्णत्वास पोहचली होती हे यावरून सहज लक्षात येते. त्याकाळात सुधारलेल्या समाजाचे काम सुयंत्रपणे चालवण्याइतके शास्त्रीय ज्ञान आपल्या पूर्वजांनी मिळवून ग्रंथरूपाने सुरक्षित करून ठेवले होते. दुर्दैवाने आज त्यातील अनेक ग्रंथ काळाच्या ओघात लुप्त झाले आहेत पण जे आहेत ते ही आपल्या पुर्वजांच्या ज्ञानाची व्याप्ती दाखवण्यास पुरेसे आहेत.
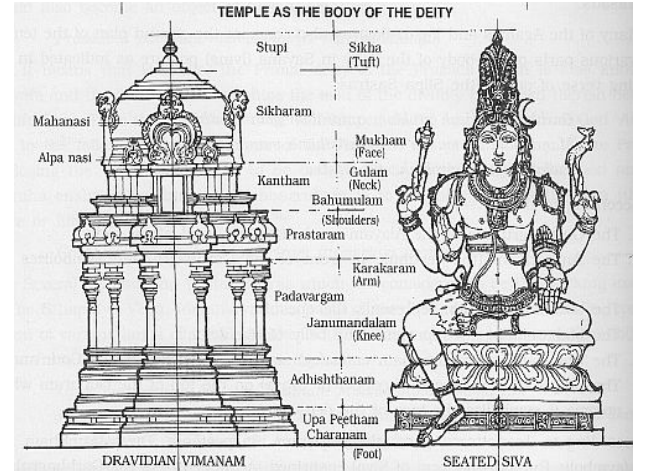
आता पाहू ३२ विद्या व ६४ कला -

१० शास्त्रे ३२ विद्या - ६४ कला

अ) कृषीशास्त्रातील विद्या -
१) वृक्षविद्या २) पशुविद्या ३) मनुष्यविद्या

आ) जल शास्त्रातील विद्या -
४) संचेतन विद्या ५) संहरण ६) स्तंभन

इ) खनिजशास्त्रातील विद्या -

७) दृति (द्यती) विद्या ८) भस्मीकरण ९) संकरण १०) पृथ:करण

ई) नौका शास्त्रातील विद्या -

११) नदी (तरी) विद्या १२) नौ विद्या १३) नौकाविद्या

उ) रथशास्त्रातील विद्या -

१४) अश्वविद्या १५) पथविद्या १६) घंटा पथ विद्या १७) सेतु विद्या

ऊ) विमानशास्त्रातील विद्या -

१८) शाकुंतविद्या १९) विमान नयन विद्या

ऋ) वेश्मशास्त्रातील विद्या -

२०) वास विद्या २१) कुट्टीविद्या २२) मंदिर विद्या २३) प्रासादविद्या

ओ) प्राकारशास्त्रातील विद्या -

२४) दुर्ग विद्या २५) कूट विद्या २६) आकार विद्या

औ) नगररचन शास्त्रातील विद्या -

२७) आपण विद्या २८) राजगृह विद्या २९) देवालय ३०) सर्वजनवास विद्या ३१) वनोपवन विद्या

अं) यंत्रशास्त्रातील विद्या -

३२) यंत्ररचना

यंत्रशास्त्रातील विद्या या इतर ठिकाणी आल्या असल्याने त्याचा वेगळा उल्लेख केलेला नाही.
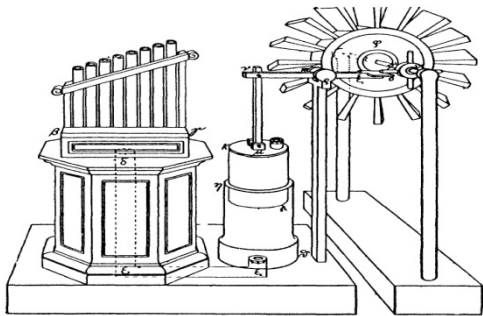
आता या ३२ विद्यांमध्ये ६४ कलांचा अंतर्भाव होतो. त्या खालील प्रमाणे आहेत.

१) वृक्षविद्येत - 1) सीराध्याकर्षण 2) वृक्षारोहण 3) यावादीक्षुविकार 4) वेणुतृणादिकृती 5) पात्राद कृति

२) पशुविद्या - 6) गजाअश्वासारथ्य 7) दुग्धदोहविकार 8) घृतांत 9) गतीशिक्षा

10) कल्याणक्रिया , 11) पशुचर्मांगनिर्हार 12) चर्ममार्दवक्रिया.

३) मनुष्यविद्या - 13) क्षुरकर्म 14) कंचुकादिसीवन 15) गृहभांडादिमार्जन 16) वस्त्रसंमार्जन 17) मनोनुकुलसेवा 18) नानादेशवर्णलेखन 19) शिशुसंरक्षण 20) संयुक्तताडन 21)शय्यास्तरण 22) पुष्पादिग्रंथन 23) हिग्वादिरससंयोगेन 24) अन्नपाचन

७) दृतिविद्येत - 25) जलवायनाग्निसंयोग 26) रन्तादिसद् सज्ञान

८) भस्मिकरण विद्येत - 27) क्षार निष्कासन 28) क्षर परिक्षा, 29) स्नेह निष्कासन, 30)इष्टिकाचूर्णादिभाजन

९) संकरण विद्येत - 31) धात्वौधि संयोग, 32) काचपात्रिदिकरण, 33) लोहाभिसार, 34)धतूपाषाण, 35) काष्टादि भांडक्रिया, 36) स्वर्णादिताथाम्यदर्शन, 37) मकरंदासवादि कृति

१०) पृथ:करण विद्येत -38) संयोग धातूज्ञान,

११) तरीविद्येत - 39) बाल्हादिर्भिर्जलतरण

१२) नौविद्येत - 40) सूत्रादि रज्जुकरण,

१३) नौकाविद्येत - 41) नौकानयन

१४) घंटापथविद्येत - 42) वृत्तखंडबंधन, 43) समभूमिक्रिया 44) शिलार्चा, 45) विवरकरण,

१५) सेतु विद्या - 46) जलबंधन

१६) विमानविद्येत - 47) वायुबंधन

१७) शकुंतविद्येत - 48) शकुंतगति शिक्षा

१८) विमाननयन विद्येत - 49) स्वर्णलेप

१९) वासोविद्येत - 50) चर्मपट बंधन

२०) कुट्टीविद्येत - 51) मृत्साधन 52) आच्छादन 53) चूर्णोपलेप

२१) मंदिरविद्येत - 54) मृत्कर्म, 55) चित्राद्यालेखन

२२) प्रासादविद्येत - 56) प्रतिमाकरण 57) तलक्रिया 58) शिखरकर्म

२३) युद्दविद्येत - 59) शस्त्रसंधान, 60) अस्त्रनि:पातन, 61) व्यूहरचना, 62) मल्लयुद्ध, 63) शल्यहतिज्ञान व्रणव्याधिनिराकरण

२४) आरामविद्येत - 64) वनौपवनकारिका

* मराठी वर्णाक्षरे ही शास्त्रांचे निर्देशक आहेत. मराठी क्रमांक हे विद्यांचे निर्देशक आहेत. व इंग्रजी क्रमांक हे कलांचे निर्देशक आहेत.

अशा तऱ्हेने शिल्पशास्त्रामध्ये हे ३ खंड १० शास्त्रे, ३२ विद्या व ६४ कला यांचा अंतर्भाव होतो.

या ३२ विद्या व ६४ कलांचा नांवावरून बोध होतोच, प्रत्येकाचे विष्लेशन विस्तारभयास्तव इथे देता येणार नाही. तरी ज्यांना याविषयी अधिक माहीती हवी आहे त्यांनी खालील पुस्तके पहावीत.

****

संदर्भ सूची -

प्राचीन हिंदी शिल्पशास्त्रसार - कृष्णाजी विनायक वझे - वरदा प्रकाशन

भारतीय शिल्पशास्त्रे - डॉ. अशोक नेने - नचिकेत प्रकाशन

प्रसाद मासिक (वास्तुशास्त्र विशेषांक) ऑगष्ट २००३ - प्रसाद प्रकाशन

॥ दारिद्र्य दहन शिवस्तोत्रम् ॥
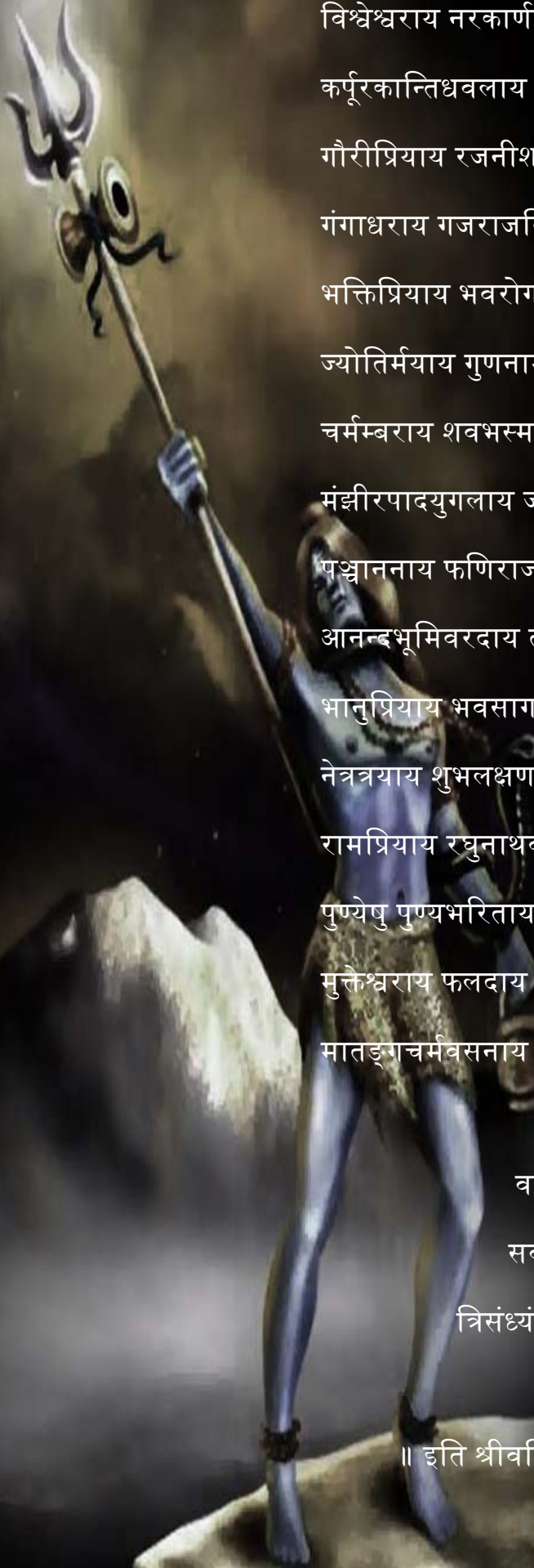
विश्वेश्वराय नरकार्णव तारणाय कर्णामृताय शशिशेखरधारणाय ।

कर्पूरकान्तिधवलाय जटाधराय दारिद्र्य दुःखदहनाय नमः शिवाय ॥ १॥

गौरीप्रियाय रजनीशकलाधराय कालान्तकाय भुजगाधिपकङ्कणाय ।

गंगाधराय गजराजविमर्दनाय दारिद्र्य दुःखदहनाय नमः शिवाय ॥ २॥

भक्तिप्रियाय भवरोगभयापहाय उग्राय दुर्गभवसागरतारणाय ।

ज्योतिर्मयाय गुणनामसुनृत्यकाय दारिद्र्य दुःखदहनाय नमः शिवाय ॥ ३॥

चर्मम्बराय शवभस्मविलेपनाय भालेक्षणाय मणिकुण्डलमण्डिताय ।

मंझीरपादयुगलाय जटाधराय दारिद्र्य दुःखदहनाय नमः शिवाय ॥ ४॥

पञ्चाननाय फणिराजविभूषणाय हेमांशुकाय भुवनत्रयमण्डिताय ।

आनन्दभूमिवरदाय तमोमयाय दारिद्र्य दुःखदहनाय नमः शिवाय ॥ ५॥

भानुप्रियाय भवसागरतारणाय कालान्तकाय कमलासनपूजिताय ।

नेत्रत्रयाय शुभलक्षण लक्षिताय दारिद्र्य दुःखदहनाय नमः शिवाय ॥ ६॥

रामप्रियाय रघुनाथवरप्रदाय नागप्रियाय नरकार्णवतारणाय ।

पुण्येषु पुण्यभरिताय सुरार्चिताय दारिद्र्य दुःखदहनाय नमः शिवाय ॥ ७॥

मुक्तेश्वराय फलदाय गणेश्वराय गीतप्रियाय वृषभेश्वरवाहनाय ।

मातङ्गचर्मवसनाय महेश्वराय दारिद्र्य दुःखदहनाय नमः शिवाय ॥ ८॥

वसिष्ठेन कृतं स्तोत्रं सर्वरोगनिवारणं ।

सर्वसम्पत्करं शीघ्रं पुत्रपौत्रादिवर्धनम् ।

त्रिसंध्यं यः पठेन्नित्यं स हि स्वर्गमवाप्नुयात् ॥ ९॥

॥ इति श्रीवसिष्ठविरचितं दारिद्र्यदहनशिवस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥